Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا تَدَايَنْتُمْ بِدَيْنٍ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى فَاكْتُبُوْهُ ۝

(सूरतुल बक़रा आयत :283)

अनुवाद: हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! जब तुम एक निर्दिष्ट समय के लिए कर्ज़ का लेन देन करो तो उसे लिख लिया करो ।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 3

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 48

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

20 रबीयुल अव्वल 1439 हिजरी कमरी 29 नबुव्वत 1397 हिजरी शमसी 29 नवम्बर 2018 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला ने फरमाया कि कश्ती नूह में हमारी शिक्षा का जो भाग है वह ज़रूर हर अहमदी को पढ़ना चाहिए बल्कि पूरी कश्ती नूह ही पढ़ें।

वह वस्तु जो गुनाह से मुक्ति दिलाकर ख़ुदा तक पहुंचाती है और सत्य और दृढ़ सकंल्प में फरिश्तों से भी आगे बढ़ा देती है वह विश्वास है। प्रत्येक धर्म जो विश्वास के साधन उपलब्ध नहीं कराता वह झूठा है। प्रत्येक धर्म जो सुनिश्चित साधनों से ख़ुदा के दर्शन नहीं करा सकता वह झूठा है, प्रत्येक धर्म जिसमें प्राचीन कहानियों के अतिरिक्त और कुछ नहीं वह झूठा है।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

हे ख़ुदा के जिज्ञासुओ! कान खोलो और सुनो कि विश्वास जैसी कोई वस्तु नहीं। विश्वास ही है जो गुनाह से बचाता है, विश्वास ही है जो पुण्य कर्म करने की शक्ति देता है, विश्वास ही है जो ख़ुदा का सच्चा प्रेमी बनाता है। क्या तुम विश्वास के बिना गुनाह का परित्याग कर सकते हो? क्या तुम विश्वास के अदभुत प्रकाश के अभाव में तामसिक आवेग से रुक सकते हो? क्या तुम विश्वास के बिना कोई सांत्वना प्राप्त कर सकते हो? क्या तुम विश्वास के बिना कोई सच्चा परिवर्तन ला सकते हो? क्या तुम विश्वास के बिना कोई सच्ची ख़ुशहाली प्राप्त कर सकते हो? क्या आकाश के नीचे कोई ऐसा कफ़्फ़ार: और फ़िदिया है जो तुम से गुनाहों का परित्याग करा सके? क्या मरयम का बेटा ईसा ऐसा है कि उसका बनावटी खून गुनाह से मुक्ति दिलाएगा? हे ईसाइयो ऐसा झूठ मत बोलो जिससे धरती टुकड़े-टुकड़े हो जाए। यसू मसीह स्वयं अपनी मुक्ति के लिए विश्वास का मुहताज था। उसने विश्वास किया और मुक्ति पाई। अफ़सोस है उन ईसाइयों पर जो यह कहकर प्रजा को धोखा देते हैं कि हमने मसीह के खून से गुनाह से मुक्ति पाई है। हालांकि वे सर से पांव तक गुनाहों में डूबे हुए हैं। वे नहीं जानते कि उनका ख़ुदा कौन है बल्कि जीवन तो लापरवाही से भरपूर है। मदिरा की मस्ती उनके मस्तिष्क में समाई हुई है, परन्तु वह पवित्र मस्ती जो आकाश से उतरती है उससे वे अवगत नहीं। जो जीवन ख़ुदा के साथ होता है और जो पवित्र जीवन के परिणाम होते हैं वे उनके भाग्य में नहीं। अत: तुम स्मरण रखो कि विश्वास के बिना तुम अंधकारमय जीवन से बाहर नहीं आ सकते और न रूहुलक़ुदुस तुम्हें मिल सकता है। बधाई है उनको जो विश्वास रखते हैं क्योंकि वे ही ख़ुदा के दर्शन करेंगे। बधाई है उनको जो संदेहों से मुक्ति पा गए हैं, क्योंकि वे ही गुनाह से मुक्ति प्राप्त करेंगे। बधाई तुम्हें जबकि तुम्हें विश्वास की दौलत प्रदान की जाए कि उसके पश्चात तुम्हारे गुनाह की समाप्ति होगी। गुनाह और विश्वास दोनों एक स्थान पर एकत्र नहीं हो सकते। क्या तुम ऐसे बिल में हाथ डाल सकते हो जिसमें तुम एक अत्यन्त ज़हरीले सांप को देख रहे हो? क्या तुम ऐसे स्थान पर खड़े रह सकते हो, जिस स्थान पर किसी ज्वालामुखी पर्वत से पत्थरों की वर्षा हो रही हो या बिजली गिर रही हो या एक चीर फाड़ डालने वाला शेर के हमला करने का स्थान है, या एक स्थान है जहां एक सर्वनाश करने वाली प्लेग मानव जाति को समाप्त कर रही है। फिर यदि तुम्हें ख़ुदा पर ऐसा ही विश्वास है जैसा कि सांप, बिजली, शेर, या प्लेग पर, तो असंभव है कि उसके सम्मुख तुम अवज्ञाकारी बन कर दण्ड का मार्ग अपना सको या उससे सत्य और वफ़ादारी का संबंध तोड़ सको। हे वे लोगो! जो भलाई और सच्चाई हेतु बुलाए गए हो तुम निस्सन्देह समझो कि तुम में ख़ुदा की चुम्बकीय शक्ति उस समय पैदा होगी और उसी समय तुम गुनाहों को घृणित धब्बों से पवित्र किए जाओगे जब तुम्हारे हृदय विश्वास से भर जाएँगे। संभव है तुम कहो कि हमें विश्वास प्राप्त है। अत: स्मरण रहे कि यह तुम्हें धोखा हुआ है। विश्वास तुम्हें कदापि प्राप्त नहीं, क्योंकि उसके अनिवार्य तत्व प्राप्त नहीं। कारण यह कि तुम गुनाह का परित्याग नहीं करते, तुम ऐसा पांव आगे नहीं बढ़ाते जो बढ़ाना चाहिए। तुम उस प्रकार नहीं डरते जिस प्रकार कि डरना चाहिए। स्वयं विचार करो कि जिसको विश्वास है कि अमुक बिल में सांप है वह उस बिल में कब हाथ डालता है, और जिस को विश्वास है कि उसके भोजन में विष है वह उस भोजन को कब खाता है। जो स्पष्टत: देख रहा है कि अमुक जगह में चीर-फाड़ डालने वाले एक हज़ार शेर हैं, उसके पांव लापरवाही और गफ़लत से उस जंगल की ओर क्योंकर उठ सकते हैं। अत: तुम्हारे हाथ पांव, कान और तुम्हारे नेत्र गुनाह पर किस प्रकार साहस कर सकते हैं, यदि तुम्हें ख़ुदा और उसके बदला देने एवं दण्ड विधान पर विश्वास है। गुनाह विश्वास पर विजयी नहीं हो सकता और जब तक कि तुम एक भस्म और नष्ट करने वाली अग्नि देख रहे हो तो उस अग्नि में स्वयं को क्योंकर डाल सकते हो। विश्वास की दीवारें आकाश तक हैं। शैतान उन पर चढ़ नहीं सकता। प्रत्येक जो पवित्र हुआ वह विश्वास से पवित्र हुआ। विश्वास दु:ख उठाने की शक्ति देता है। यहां तक कि एक राजा जो उसके सिंहासन से उतरता है और भिख़ारियों का लिबास पहनता है। विश्वास प्रत्येक दु:ख को आसान कर देता है। विश्वास ख़ुदा के दर्शन कराता है। प्रत्येक पवित्रता विश्वास-मार्ग से आती है। वह वस्तु जो गुनाह से मुक्ति दिलाकर ख़ुदा तक पहुंचाती है और सत्य और दृढ़ सकंल्प में फरिश्तों से भी आगे बढ़ा देती है वह विश्वास है। प्रत्येक धर्म जो विश्वास के साधन उपलब्ध नहीं कराता वह झूठा है। प्रत्येक धर्म जो सुनिश्चित साधनों से ख़ुदा

शेष पृष्ठ 7 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

पैग़ाम

सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़

सालाना इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह भारत 2018

प्रिय मेम्बरान अन्सारुल्लाह भारत

अल्हमदो लिल्लाह आप को इस साल भी अपना सालाना इज्तिमा आयोजित करने की तौफ़ीक़ मिल रही है। अल्लाह तआला इसे हर दृष्टि से मुबारक फरमाए और सभी शामिल होने वालों को इससे भरपूर लाभ की तौफ़ीक़ प्रदान फरमाए। आमीन।

अल्लाह तआला का यह महान उपकार है कि आप को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम को स्वीकार करने की तौफीक़ मिली। आप ने जमाअत को अपने इस संसार से जाने की दुख देने वाली ख़बर के साथ यह ख़बर भी सुनाई थी कि

'' प्राचीन से अल्लाह तआला की यह आदत है कि ख़ुदा तआला दो कुदरतें दिखलाता है ताकि मुखाल्फ़ों की दो झूठी ख़ुशियों को पामाल कर के दिखलावे अत: अब संभव नहीं कि ख़ुदा तआला अपनी प्राचीन आदत का त्याग कर दे। इसलिए तुम्हारे लिए मेरी इस बात से जो मैंने तुम्हारे पास बयान की शोक मत करो और तुम्हारे दिल परेशान न हो जाएं क्योंकि तुम्हारे लिए दूसरी कुदरत का भी देखना ज़रूरी है और उस का आना तुम्हारे लिए बेहतर है क्योंकि वह चिरस्थायी है जिसका सिलसिला क़यामत तक विच्छेद नहीं होगा। '' (पत्रिका अलवसीयत, रूहानी ख़ज़ायन, जल्द 20, पेज 305)

तो तुम को मुबारक हो कि आप अहमदिया ख़िलाफत के साथ जुड़े हैं जिसे क़यामत तक शान शौकत के साथ स्थापित रहना है। यह ऐसी बरकतों वाली प्रणाली है जिस के बिना दुनिया तरक्की नहीं कर सकती। जमाअत की एकता भी इस के बिना स्थापित नहीं रहा सकती। यह ख़िलाफत ही बरकत है कि सब दुनिया में इस्लाम की सुंदर शिक्षा पहुँच रही है। एम. टी.ए द्वारा जमाअत का समय के ख़लीफा के साथ संबंध प्रत्येक क्षण मज़बूत हो रहा है और हर पक्ष से अल्लाह तआला के समर्थन के तथा सहायता के नज़ारे हम रोज़ देख रहे हैं। **ख़िलाफत की नेअमत इस्लाम के पहले दौर में उस समय छीनी गई जब दुनियादारी अधिक आ गई थी। अब इंशा अल्लाह यह फ़ैज़ तो ख़ुदा तआला जारी रखेगा लेकिन इससे वे लोग वंचित हो जाएंगे जो धर्म को दुनिया पर प्राथमिकता देने के वादा को पूरा नहीं करेंगे।** इन शर्तों पर अमल नहीं होगा जो ख़िलाफत के इनाम के साथ अल्लाह तआला ने रखे हुए हैं। अत: इस नेअमत का सम्मान करें और अपने घर वालों को इस ख़िलाफत की आवश्यकता और बरकतों के बारे में वर्णन करें। अल्लाह करे कि हम अल्लाह तआला की इच्छा के अनुसार ख़िलाफत के पुरस्कार को पाने वाले हों।

यह भी याद रखें कि ख़िलाफत का वादा उन से है जो अल्लाह तआला का अधिकार अदा वाले हों और पहला अधिकार है कि यअबुदूननी । वह मेरी इबादत करेंगे। अत: अगर इस नेअमत से लाभ उठाना है तो पांचों समय अपनी नमाज़ की रक्षा करें। कुरआन शरीफ ने इसे इस प्रकार की फर्ज़ इबादत करार दिया है जो समय पर अदा करनी आवश्यक है। हदीसों में भी नमाज़ की बहुत ताकीद की गई है। एक बार आं हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक उदाहरण द्वारा नमाज़ के महत्व को वर्णन फरमाया । आप ने फरमाया कि क्या तुम समझते हो कि यदि किसी के दरवाज़े के पास नहर गुज़र रही हो और उस में पांच बार रोज़ाना नहाए, तो उस के शरीर पर कोई मैल रह सकती है ? सहाबा ने अर्ज़ किया हे रसूलल्लाह! बेशक! कोई मैल नहीं रहेगी। इस पर आप ने फरमाया तो फिर यही उदाहरण पांच नमाज़ों का है। अल्लाह तआला उनके द्वारा गुनाह माफ करता और कमज़ोरियाँ दूर करता है। (सहीह अल बुख़ारी, किताब मवाकीतुस्सलात)

मस्जिदों को आबाद करने की तरफ के भी ध्यान देना चाहिए। इस्लाम ने पुरुषों को नमाज़ जमाअत की शिक्षा दी है। इससे एकता पैदा होती है। एक हदीस में नमाज़ जमाअत के साथ पढ़ने को नमाज़ अकेले पढ़ने की तुलना में सत्ताईस गुना सवाब बयान किया गया है। एक मोमिन को नमाज़ का ऐसा पाबन्द होना चाहिए कि फिर कभी इसे इस की अदायगी करने के में सुस्ती न हो। जब व्यक्ति नियमित नमाज़ अदा करता है, तो इसे उस का आन्नद भी प्रदान किया जाता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम फरमाते हैं कि

" नमाज़ों की पाबन्दी करो और तौब: और इस्तिग़फार में व्यस्त रहो। मानव जाति के अधिकारों की रक्षा करो। और किसी को दुख न दो। सच्चाई और पाकीज़गी में तरक्की करो तो अल्लाह तआला हर किस्म का फज़्ल प्रदान करेगा। औरतों को भी अपने घरों में नसीहत करो कि वह नमाज़ की पाबन्दी करें। "

(मल्फूज़ात, भाग 3, पृष्ठ 434)

इसलिए ख़ुद भी नमाज़ों के पाबन्द बनें और अपने परिवार को भी इसकी नसीहत करते रहें।

फिर अंसारुल्लाह की एक महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी औलाद का प्रशिक्षण है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपने प्यारे मुरीदों को औलाद को धर्म का ख़ादिम बनाने, उनके आस्थाओं के सुधार करने, उनके आचरण के सुधार को ठीक करने की नसीहत फ़रमाई है। आप चाहते थे कि औलाद के जन्म से पहले मर्द तथा औरत दोनों नेकियों पर अमल करने वाले हों।

एक रिवायत है कि एक अहमदी ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को पत्र लिखा कि उनके एक तब्लीग़ वाले दोस्त की तीन पत्नियां हैं लेकिन औलाद नहीं। वह इस शर्त पर बैअत पर तैय्यार हुए हैं कि हज़ूर की दुआ से उनकी पहली पत्नी से लड़क पैदा हो। उन्हें जवाबी पत्र प्राप्त हुआ कि हुज़ूर ने दुआ की है और फरमाया कि आप को बेटा होगा लेकिन शर्त यह है कि ज़कारिया वाली तौबा करें। अत: इन साहिब ने अधर्म के जीवन को छोड़ दिया। शराब और रिशवत वसूली छोड़ दी और नमाज़ों के पाबन्द हो गए। अल्लाह तआला ने उन्हें हुज़ूर की दुआ से औलाद प्रदान की। इसी तरह औलाद के साथ साथ इलाका के बहुत सारे लोगों को भी बैअत की तौफीक़ प्रदान फरमाई। (सार रिवायत संख्या 241 सीरतुल मेहदी जिल्द 1)

अत: माता पिता को नेकी का उत्कृष्ट नमूना दिखाना चाहिए। अल्लाह तआला नेकी का फल प्रदान फरमाता है। इस की यह भी सुन्नत है कि वह सदिकों और सच्चों की औलाद को भी उनकी भलाई का इनाम देता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"वह काम करो जो औलाद के लिए उत्कृष्ट नमूना और नसीहत हो और इसलिए आवश्यक है कि सब से पहले ख़ुद अपना सुधार करो तुम उत्त्म स्तर के मुत्तकी और परहेज़गार बन जाओगे। और ख़ुदा तआला को राज़ी कर लोगे तो विश्वास किया जाता है कि अल्लाह तआला तुम्हारी औलाद के साथ भी अच्छा मामला करेगा। कुरआन शरीफ में खिज़र और मूसा (अलैहिस्सलाम) का किस्सा दर्ज है कि इन दोनों ने मिलकर एक दीवार को बना दया जो यतीम बच्चों की थी वहाँ अल्लाह फरमाता है۔ وَكَانَ اَبُوْهُمَا صَالِحاً कि उनका पिता सालेह (नेक) था। यह वर्णन नहीं किया कि वे कैसे थे। अत: इस लक्ष्य को हासिल करो। औलाद के लिए हमेशा इस नेकी को प्राप्त करने की कोशिश करो।

(मल्फूज़ात जिल्द 4 पृष्ठ 444 से 445)

अल्लाह तआला आपको इन सभी नसीहतों पर अनुकरण करने की तौफीक़ प्रदान करे और अपने फज़्लों से नवाज़े। आमीन

वस्सलाम, ख़ाकसार

मिर्ज़ा मसरूर अहमद, ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़ुत्बः जुमअः

***हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक वास्तविक अहमदी बनने के लिए कुछ शर्तें रखी हैं, कुछ ज़िम्मेदारियां डाली हैं, कुछ कर्तव्यों की तरफ ध्यान दिलाया है कि अगर उन पर अमल करोगे, अगर उन्हें अदा करोगे तो तभी वास्तविक रंग में मेरी जमाअत में गिने जाओगे।**

***आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि कर्मों में दिखावे से काम लेना, बनावट से काम लेना और छुपी इच्छाओं में पीड़ित होना ये भी शिर्क है।**

***अगर कोई व्यक्ति धार्मिक आदेश को पीछे डाल कर सांसारिक इच्छाओं को पूरा करता है तो शिर्क का दोषी होता है।**

***ख़िलाफत का तो मूल काम ही शिर्क को ख़त्म करना और तौहीद की स्थापना और इस मिशन को पूरा करने के लिए है हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने भेजा है।**

***ख़िलाफत का सम्मान स्थापित करना समय के ख़लीफा का काम है और वह उसकी ज़िम्मेदारी है और वह करेगा और इसलिए करेगा कि अल्लाह तआला के वादे के अनुसार और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार ख़लीफा द्वारा तौहीद का संदेश दुनिया में फैलना है और दुनिया से शिर्क का ख़ात्मा होना है।**

***अगर तौहीद का दावा है अगर अल्लाह तआला की इबादत का दावा है, अगर वास्तविक मुसलमान बनने का दावा है तो झूठ को अपने अंदर से हमें निकालना होगा और झूठे को भी निकालना होगा।**

*** कुछ लोग मामूली बातों पर ग़लत काम करते हैं। यह एक मोमिन की शान नहीं है।**

***हमारे कर्म हमारी शिक्षा के अनुसार होंगे तो हमारी तब्लीग़ भी फलदार होगी। हमारे प्रभाव लोगों पर अच्छे होंगे।**

कुरआन की आयतों, आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीसों, और हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेशों की रोशनी में बैअत की वास्तविकता, समय के ख़लीफा का सम्मान और ख़िलाफत अहमदिया से दृढ़ संबंध का महत्व, तौहीद की स्थापना, अल्लाह तआला की इबादत , जमाअत के साथ नमाज़ का प्रावधान, इस्तिग़फार तथा अल्लाह तआला के अधिकारों को अदा करना, मानक वित्तीय कुर्बानी, और मारूफ आज्ञाकारिता के वास्तविक अर्थ के बारे में ईमान वर्धक वर्णन। शिर्क, झूठ, व्यभिचार, सभी प्रकार के अत्याचार, अंहकार और गर्व से बचने की हिदायत।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 26 अक्तूबर 2018 ई. स्थान - मस्जिद बैतुर्रहमान, मैरीलैण्ड , अमरीका।

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

प्रत्येक व्यक्ति पुरुष या महिला जो अपने आप को अहमदी कहता है उसका केवल इतनी घोषणा ही उसे वास्तविक अहमदी नहीं बनाती कि वे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानता है, आप के दावे को मानता है बल्कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक वास्तविक अहमदी बनने के लिए कुछ शर्तें रखी हैं, कुछ ज़िम्मेदारियां डाली हैं, कुछ कर्तव्यों की तरफ ध्यान दिलाया है कि अगर उन पर अमल करोगे, उन्हें अदा करोगे तो तभी वास्तविक रंग में मेरी जमाअत में गिने जाओगे। मानो अहमदी बनने के लिए केवल आस्था का बदलाव पर्याप्त नहीं है या केवल इस बात पर संतोष नहीं कर लेना कि मेरे माता पिता अहमदी थे तो मैं भी अहमदी हूँ। या मैं ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दावों को सच्चा मान लिया तो मैंने मान लिया और मैं अहमदी हूँ। यह आस्था के अनुसार तो बेशक एक व्यक्ति को अहमदी बनाता है लेकिन व्यावहारिक अहमदी बनने के लिए अपनी सारी क्षमताओं और सामर्थ्यों के साथ इन बातों का पालन करना आवश्यक है जिनकी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक अहमदी से उम्मीद फरमाई है। आप ने बड़ा स्पष्ट रूप से फरमाया कि अगर तुम अपनी सभी शक्तियों के साथ इन बातों का पालन करने की कोशिश नहीं कर रहे तो फिर केवल तुम्हारा दावा केवल मुंह का मौखिक दावा है। आप ने फरमाया:

"बैअत से अभिप्राय अल्लाह तआला को जान सुपुर्द करना है। इसका मतलब यह है कि हम ने अपनी जान आज अल्लाह तआला के हाथ बेच दी।"

(मल्फूज़ात जिल्द 7 पृष्ठ 29 प्रकाशन 1985 ई मुद्रित यू.के)

तो यह मामूली काम नहीं है। जब हम अपनी कोई चीज़ किसी को बेचते हैं तो उस पर हमारा कोई अधिकार नहीं रहता बल्कि जिसके पास बेची हो वह उसका मालिक बन जाता है और फिर उसे अपनी इच्छा के अनुसार उपयोग करता है। तो यह वह स्थिति है जो हमें अपने ऊपर तारी करनी चाहिए और यह वह सोच है जो हमें अपनी रूह के बारे में रखनी चाहिए। इस विचार और इस स्थिति को प्राप्त करने के लिए, आप ने फरमाया कि:

"बैअत करने वाले को सर्व प्रथम विनम्रता और विनय धारण करना पड़ता है और अपने अंहकार तथा नफ्सानियत से अलग होना पड़ता है।" अब यह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के शब्द हैं कि अंहकार और नफ्सानियत से अलग होना पड़ता है। कुछ लोगों में ख़ुदी और नफ्सानियत की यह स्थिति है कि एक अधिकारी दूसरे अधिकारी से नाराज़ होकर एक जगह मेरी मौजूदगी के बावजूद मस्जिद में नमाज़ों के लिए हाज़िर नहीं हुआ। इसलिए कि इस उहदेदार से उस के रिश्ते अच्छे नहीं थे। ख़ुदी और नफ्सानियत इस हद तक बढ़ गई कि ख़िलाफत की बैअत का दावा तो है लेकिन कोई उसका सम्मान नहीं है। अत: हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि अगर बैअत की है तो ख़ुदी और नफ्सानियत से अलग होना पड़ेगा। फरमाया कि "तब वह विकास के योग्य होता है लेकिन जो बैअत के साथ नफ्सानियत भी रखता है उसे हरगिज़ लाभ प्राप्त नहीं होता।"

(मल्फूज़ात जिल्द 6 पृष्ठ 173.प्रकाशन 1985 ई मुद्रित यू.के)

एक मौखिक दावा है। मिलेंगे तो बहुत सम्मान के साथ मिलेंगे हैं, परन्तु आपस

में रंजिशों के कारण इस बात की भी कोई परवाह नहीं कि समय का ख़लीफा वहाँ मौजूद है और इसके पीछे नमाज़ें पढ़ने जाना है न कि किसी अधिकारी की ख़ातिर मस्जिद में आना है, और ख़ुद भी अधिकारी है। तो अगर यह स्थिति है, तो ऐसे अहमदी होने का कोई फायदा नहीं है। तो जान बेचना यह है कि विनम्रता और विनय पैदा होता है। अंहकार को मारना पड़ता है। ख़ुदी और नफ्सानियत को अलग करना पड़ता है। मनुष्य का अपना कुछ भी न हो और सब कुछ अल्लाह तआला के आदेश के अनुसार हो। और जब यह हालत हो, तो फिर यह नहीं कि अल्लाह तआला इस जान को नष्ट कर देगा। जब अल्लाह तआला को जान दे दी अल्लाह तआला इस प्रकार की जान की सुरक्षा करता है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि

"अगर बैअत के समय वादा अन्य है और फिर कर्म अन्य है तो देखो कितना अंतर है। " कितना बड़ा विरोधाभास है तुम्हारी बातों में। "अगर तुम अल्लाह तआला से अंतर रखोगे तो वह तुम से अंतर रखेगा।"

(मल्फूज़ात जिल्द 4 पृष्ठ 70-71.प्रकाशन 1985 ई मुद्रित यू.के)

आपने फ़रमाया " ... इसलिए तुम अपने ईमानों तथा कर्मों की समीक्षा किया करो कि क्या ऐसा परिवर्तन और सफाई पैदा कर ली है कि तुम्हारा दिल अल्लाह तआला का अर्श हो जाए और तुम उसकी सुरक्षा की छाया में आ जाओ।"

(मल्फूज़ात जिल्द 4 पृष्ठ 70 हाशिया प्रकाशन 1985 ई मुद्रित यू. के)

आपने फ़रमाया कि "मैं कई बार अपनी जमाअत को कहा है कि तुम इस बैअत पर भरोसा न करो। इस तथ्य तक जब तक न पहुंचोगे तब तक मुक्ति नहीं।"

(मल्फूज़ात जिल्द 4 पृष्ठ 232-233 प्रकाशन 1985 ई मुद्रित यू.के)

आपने फ़रमाया कि "मैं तुम्हें बार बार यही नसीहत करता हूं कि तुम ऐसे पवित्र हो जाओ जैसे-जैसे सहाबा ने अपने अन्दर बदलाव पैदा किया।"

(मल्फूज़ात 4 पृष्ठ हाशिया प्रकाशन 1985 ई मुद्रित यू.के)

अत: सहाबा को देखें कि क्या पवित्र परिवर्तन थे। उन्होंने वर्षों बल्कि पीढ़ियों की दुश्मनी को केवल अल्लाह तआला के लिए प्यार और भाईचारा में बदल दिया इस के विपरीत यह कि कुछ मिनट की रंजिश से मस्जिदों में आना छोड़ दें। अपनी जानों को बेचा, जो बिल्कुल अज्ञानी लोग थे, शिक्षित हुए, शिक्षित से ख़ुदा वाले हुए। उन्होंने ईमानदारी से इस बात को माना कि आज से हमारा अपना कुछ नहीं सब कुछ ख़ुदा तआला का है। जब उन्होंने शिर्क से तौब: की, गुप्त रूप से जो शिर्क था उस से बचने की कोशिश की। छपा हुआ शिर्क क्या है इस को स्पष्ट करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम फमराते हैं कि

" शिर्क से यही मतलब नहीं कि पत्थरों आदि की इबादत की जाए बल्कि यह एक शिर्क है कि माध्यमों की इबादत की जाए और दुनिया के उपास्यों पर ज़ोर दिया जाए।"

(मल्फूज़ात जिल्द 6 पृष्ठ 18-19 प्रकाशन 1985 ई मुद्रित यू.के)

दुनिया के उपास्य क्या हैं? सांसारिक हित है जिसके लिए मनुष्य धर्म के आदेशों और अल्लाह तआला के आदेशों को पीछे कर देता है। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि कर्मों में दिखावा से काम लेना, बनावट से काम लेना और छुपी इच्छाओं में पीड़ित होना ये भी शिर्क है।"

(मुस्तदरक लिल्हाकिम जिल्द 4 पृष्ठ 366 किताबुल रिकाक हदीस 7940 दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 2002)

अगर कोई व्यक्ति धार्मिक आदेश को पीछे डाल कर सांसारिक इच्छाओं को पूरा करता है तो शिर्क का दोषी होता है। सहाबा में तो अल्लाह तआला का इतना अधिक भय थी कि एक सहाबी का वर्णन आता है कि एक बार वह बैठो रो रहे थे। किसी ने रोने की वजह पूछी तो उन्होंने कहा कि मुझे आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यह बात याद आ गई है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मैं अपनी उम्मत के बारे में शिर्क और छुपी इच्छाओं से डरता हूँ।

(मुस्नद अहमद बिन हंबल जिल्द 5 पृष्ठ 835 मुस्नद शदाद बिन ओस हदीस 17250 मुद्रित आलेमुल कुतुब बैरूत 1998 ई)

यह वह स्थान था सहाबा के अल्लाह तआला से डर का और शिर्क से बचने के। लेकिन दूसरों के बारे में भी एक भावना थी कि एक विचार था कि उम्मत में इस प्रकार के लोग भी पैदा होंगे जो छुपा हुआ शिर्क करेंगे। एक विचार आया दिल में उनके और इस विचार से ही शरीर पर भयानक कपकपी छा गई, चिंता पैदा हो गई, रोना शुरू कर दिया और यही वह स्थिति है जिस से एक व्यक्ति वास्तव में तौहीद वाला और एक अल्लाह तआला की इबादत करने वाला बनता है या बन सकता है

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि:

" तौहीद केवल इस बात का नाम नहीं कि मुंह से ला इलाहा इल्लल्लाह कहें और दिल में हज़ारों मूर्ति इकट्ठा हों बल्कि जो व्यक्ति किसी अपने काम और मकर और छल और चतुराई को अल्लाह तआला जैसी महानता देता है या किसी इन्सान पर भरोसा करता है जो ख़ुदा तआला पर रखना चाहिए या अफने नफ्स को वह सम्मान देता है जो ख़ुदा तआला को देनी चाहिए इन सब अवस्थाओं में वह ख़ुदा तआला के निकट मर्ति पूजा करने वाला है।" ... याद रहे कि वास्तविक तौहीद जिस का इकरार ख़ुदा तआला हम से चाहता है और जिसके स्वीकार करने से मुक्ति जुड़ी हुई है कि अल्लाह तआला को अपनी हस्ती में प्रत्येक भागीदार से चाहे मूर्ति हो चाहे मनुष्य हो चाहे सूरज हो या चंद्रमा हो या अपना नफ्स या अपनी चतुराई और चालाकी धोखा हो पवित्र समझना और उस के मुकाबला पर कोई समर्थ प्रस्ताव न करना, कोई राज़िक न मानना, कोई सम्मान देने वाला और अपमानित करने वाला विचार न करना। "

(सिराजुद्दीन ईसाई के चार सवालों का जवाब रूहानी, ख़ज़ायन जिल्द 12 पृष्ठ 349-350)

कोई भी सम्मान देने वाला और किसी को अपमानित करने वाला विचार न करना कि उन लोगों से मेरा मान तथा सम्मान जुड़ा हुआ है बल्कि केवल तथा केवल अल्लाह तआला पर इन बातों में भरोसा हो अत: यह चीज़ है जो इस्लाम की मूल स्थिति है, जो अहमदी अहमदियत और सच्चे इस्लाम की मूल स्थिति है।

किसी ने मुझे बताया कि लोग ख़िलफात या समय के ख़लीफा को काफी उंचा स्थान देते हैं मानो वे शिर्क की सीमा तक चले गए हैं। ज्ञात हो कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी में दुनिया से शिर्क को ख़त्म करने आए थे। तो यह किसी भी तरह संभव नहीं है कि आपकी सच्ची ख़िलाफत किसी भी प्रकार के शिर्क को बढ़ावा देने या इसे हवा देने वाली हो। ख़िलाफत का तो मूल काम ही शिर्क को ख़त्म करना और तौहीद की स्थापना है और इस मिशन को पूरा करने के लिए है जिस के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आए थे। अगर कोई किसी व्यक्ति के समय के ख़लीफा से सम्मान के तरीके से मिलने से यह प्रभाव लेता है तो उसे बजाय राय स्थापित करने के सोचना चाहिए कि कहीं वे कुधारणा तो नहीं कर रहा। इस लिए अगर कुधारणा है तो कुधारणा करने वालों को कुधारणा से बचना चाहिए और यदि कोई वास्तव में इस हद तक बढ़ गया है कि जहां लोगों में इस की वजह से यह धारणा पैदा हो कि समय का ख़लीफा नऊज़ो बिल्लाह शिर्क की सीमा तक स्थान दिया जा रहा है इसे भी इस्तिग़फार करना चाहिए और सावधानी भी बरतनी चाहिए। न मैं इसे पसंद करता हूँ और न कभी किया है न मेरे से पहले ख़लीफ़ा ने किया है और न इंशा अल्लाह अगले आने वाले ख़लीफ़ा कभी इसे पसंद कर सकते हैं कि उनकी हस्ती का कोई महत्व है। हाँ ख़िलाफत का सम्मान स्थापित करना समय के ख़लीफा काम है और वह उसकी ज़िम्मेदारी है और वह करेगा और इसलिए करेगा कि अल्लाह तआला के वादा के अनुसार और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार ख़लीफा द्वारा तौहीद का संदेश दुनिया में फैलना है और दुनिया से शिर्क को समाप्त किया जाना है। इसलिए कुछ कच्चे दिमाग़ों में, प्रशिक्षण की कमी के कारण से उभरते हुए, उन्हें अपने दिमाग़ से बाहर निकला दें।

तौहीद की स्थापना की कोशिश और शिर्क से अपने मानने वालों के दिलों को शुद्ध करने के महत्त्वपूर्ण काम के बाद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें जो ध्यान दिलाया और जिस पर हमारी बैअत ली वह झूठ और नैतिक बुराइयों से बचना है। अल्लाह तआला कुरआन में कहता है

فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْأَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوا قَوْلَ الزُّوْرِ۔

(अल-हज्ज: 31) अर्थात मूर्तियों की गन्दगी से बचो और झूठ बोलने से बचें। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इसकी व्याख्या करते हुए फरमाते हैं कि

"कुरआन शरीफ ने झूठ को भी एक गन्गी और बुराई क़रार दिया है। "गंदी चीज़ क़रार दिया है, अशुद्ध बात क़रार दिया है। आप फरमाते हैं " ... देखो (इस आयत में) झूठ को मूर्ति के मुकाबला में रखा गया है और वास्तव में झूठ एक बुत है। अन्यथा क्यों सच को छोड़ कर दूसरी तरफ जाता है। जैसे बुत के नीचे कोई सच्चाई नहीं होती उसी तरह झूठ की नीचे सिवाय बनावट के और कुछ भी नहीं होता।"

(मल्फूज़ात जिल्द 3 पृष्ठ 350 प्रकाशन 1985 ई मुद्रित यू.के)

झूठ नीचे सिर्फ केवल एक बनावट है, बाहरी शब्दों को sugar-coat करके प्रस्तुत किया जाता है या कोई लिखाई है तो उस को इस तरह प्रस्तुत किया जाता है,

ख़ूबसूरता कर के दिखाया जाता है। उस के अन्दर कुछ नहीं होता।

फिर आप फरमाते हैं कि

"झूठ भी एक बुत है जिस पर भरोसा करने वाला अल्लाह तआला पर भरोसा को छोड़ देता है। सौ झूठ बोलने से अल्लाह तआला भी हाथ से जाता है। "

(इस्लामी सिद्धांत का उसूल रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 10 पृष्ठ 361)

तो अगर तौहीद का दावा है अगर अल्लाह तआला की इबादत का दावा है, अगर वास्तविक मुसलमान बनने का दावा है तो झूठ को हमें अपने अन्दर से निकलाना होगा और झूठे को भी निकालना होगा। कुछ लोग साधारण चीज़ों पर भी ग़लत बातों से काम लेते हैं। यह एक मोमिन की शान नहीं है। यह नहीं समझना चाहिए कि कुछ छोटी छोटी बातें ग़लत बातें झूठ नहीं हैं ये झूठ हैं और तौहीद से दूर ले जाने वाली हैं। बहुत से आपस की समस्याएं हैं, झगड़े हैं, ऐसी बातें हैं जिन में मनुष्य झूठ का उपयोग करके अपने हक में कुछ निर्णय करा लेता है। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने किस बारीकी से झूठ से सावधान किया है अगर इंसान इस पर विचार करे तो रौंगटे खड़े हो जाते हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जिसने किसी छोटे बच्चे को कहा कि आओ मैं तुम्हें कुछ देता हूँ और फिर वह उसे देता कुछ नहीं तो यह झूठ गिना जाएगा।

(सुनन अबी दाऊद किताबुल अदब बाब फित्तशदीद हदीस 4991)

जैसे कि मजाक़ में भी जो झूठ है वह भी झूठ है। फिर आप ने फरमाया,"झूठ गुनाह और उपद्रव की तरफ ले कर जाता है, और फिस्क तथा फुजूर जहन्नम की तरफ ले कर जाते हैं।" फिस्क का मतलब है कि सत्य से दूर हटने वाला और बहुत गुनाहगार गुनाह करने वाला। इसलिए हमें हर समय अपनी समीक्षा करते रहना चाहिए कि हम सच्चाई कि किस उच्च गुणवत्ता पर हैं या सच्चाई की उस उच्च गुणवत्ता पर स्थापित हैं जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने वर्णन की है जिसके बारे में आपने यह फरमाया कि यह जन्नत की ओर ले जाती है ।

(सुनन अबी दाऊद किताबुल अदब बाब फित्तशदीद हदीस 4989)

फिर एक बुराई हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने विशेष रूप से वर्णन की है, अपने मानने वालों को इससे बचने के लिए विशेष रूप से नसीहत फरमाई है बल्कि बैअत की शर्तों में से भी है वह व्यभिचार(ज़ना) है ।

(इज़ाला औहाम रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 3, सफ़ा 563)

अब ज़ना केवल ज़ाहरी ज़ना नहीं है कि ज़ाहिर के ग़लत कामुक कारण से होता है बल्कि आप ने फरमाया कि अल्लाह तआला जो फरमाता है कि وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنَا। अर्थात व्यभिचार के निकट मत जाओ यानी ऐसी घटनाओं से दूर रहो " ऐसे कोई भी अवसर से दूर रहो " जिन से यह विचार भी दिल में पैदा हो सकता है। " व्यावहारिक रूप से नहीं बल्कि विचार भी दिल में पैदा होता हो तो उन राहों को धारण न करो फरमाया " और उन मार्गों को धारण न करो जिन से इन गुनाह के होने की आशंका हो। "

(इस्लामी उसूल की फ्लिासफी रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 10 पृष्ठ 342)

कोई भी संभावना हो, कोई भी ख़तरा हो कि इंसान व्यभिचार की तरफ जा सकता है। आजकल के युग में टीवी इंटरनेट है, ऐसी फिल्में दिखायी जाती हैं जिन पर खुले तौर पर व्यभिचार की तहरीक की जाती है। इसलिए ऐसी चीज़ों से बचना हर अहमदी का काम है। कई घरों में इसलिए लड़ाई झगड़े हो रहे हैं, कई घर इसलिए टूट रहे हैं या टूट चुके हैं कि पति जो है बैठा है फिल्में देख रहा है या इंटरनेट पर बैठा हुआ है और ग़लत सोचें पैदा हो रही हैं। कई युवा इस वजह से नष्ट हो रहे हैं और बुरी संगत में पड़े हुए हैं क्योंकि नग्न और ग़लत फिल्में देखने की आदत है। यह तथाकथित समाज इस परिवेश को तरक्की के रूप में समझता है, लेकिन हम ने ख़ुद को इन बुराइयों से बचाना है। ख़ुद ये लोग अब कहते हैं कि इस के नुकसान हैं और आप ख़ुद जा कर अश्लील फिल्मों की सूचना लें तो आप को पता चलेगा यह व्यभिचार की तरफ ले जा रहे हैं, घरेलू मार धाड़ (domestic violence) की तरफ ले जा रहे हैं और एक गलत रिश्ते पैदा हो रहे हैं। बच्चों से रेप की घटनाएं हो रही हैं और यह सब गंदी फिल्मों के कारण हो रहा है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम ने फरमाया कि विचार भी दिल में मत सोचो। अगर विचार दिल में आता है, तो उस से बचें। तो अब यह साबित हो रहा है कि इन सभी चीजों को देखने से ये सब कुछ ग़लत हो रहा है। तो एक अहमदी को निश्चित रूप से इन चीज़ों से बचना चाहिए।

फिर, एक वास्तविक अहमदी बनने के लिए, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हर प्रकार के अत्याचार से बचने के लिए विशेष रूप से ध्यान दिलाया है। आपने फरमाया, "यदि मेरी तरफ सम्बन्धित होना है, तो फिर किसी शरारत और ज़ुल्म तथा फसाद एवं उपद्रव का विचार भी दिल में न लाओ।"

(उद्धरित मज्मूआ इश्तेहारात पृष्ठ 46-47)

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पूछा गया, सबसे बड़ा अन्याय कौन सा है? तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया "सबसे बड़ा अन्याय यह है कि कोई भाई अपने भाई के हक से एक हाथ ज़मीन दबा ले, यानी उस से छीन ले।"इस ज़मीन का एक कंकर भी जो है, एक छोटा सा कंकर भी है, जो दो अंगुलियों में आता है, जिसने ग़लत काम करने के कारण लिया है, किसी छोटी सी छोटी सी चीज़ का क़ब्ज़ा कर लिया हो, तो इस के नीचे की ज़मीन के नीचे की सारी ज़मीनें इस ज़मीने की नीचे की जितनी ज़मीन हैं इस के गर्दन में बोझ बना कर रखे जाएंगे। जब इसका हिसाब होगा और वह हार गले में डाल दिया जाएगा।

(अहमद बिन हंबल जिल्द 2 पृष्ठ 59-60 मसनद अब्दुल्लाह बिन मसूद हदीस 3767)

अब ज़मीन के नीचे एक सिरे से दूसरे सिरे तक हज़ारों मील के क्षेत्रों हैं, अब व्यक्ति कल्पना करे कि इस वजह से कितने बड़ा भार व्यक्ति पर डलेगा। इतनी बड़ी सज़ा है कि कोई भी मनुष्य इसकी कल्पना नहीं कर सकता है। तो किसी के अधिकारों को दबाकर एक बड़ी ग़लती और गुनाह है। अगर हम ग़ैर-मुसलमानों को इस्लाम की अच्छाइयां बताते हैं तो कहते हैं कि बन्दों के अधिकारों को अदा करने के उच्चतम मानक इस्लाम की शिक्षा में हैं। इस्लाम अधिकार लेने के स्थान पर अधिकारों को अदा करने की तरफ ध्यान दिलाता है। लोगों तो हम बढ़ बढ़ कर यह बातें बताते हैं और यदि हमारे कर्म इस से अलग हैं, तो हम गुनाहगार हैं और झूठ बोल रहे हैं। इसलिए हर अहमदी को इस का भी ख्याल रखना चाहिए। यदि हमारे कर्म हमारी शिक्षा के अनुसार हैं तो हमारे कर्म उपयोगी होंगे। हमारी तब्लग़ी भी अच्छी होगी हमारी बातों का प्रभाव लोगों पर अच्छे होंगे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम ने जो निर्धारित मानदंड वर्णन फरमाए हैं और जैसा कि यह वर्णन हुआ है कि किसी भी तरह से अन्याय करने का विचारा भी दिल में नहीं लाना इस के स्थान पर यह कि किसी पर अत्याचार किया जाए।

फिर अल्लाह तआला की इबादत करना एक मोमिन की एक प्रमुख शर्त है, बल्कि अल्लाह तआला ने मनुष्य के जन्म का उद्देश्य भी इबादत वर्णन किया है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं:

"हे वे लोगो ! जो अपने आप को मेरी जमाअत में शामिल करते हो आसमान पर तुम उस समय मेरी जमाअत में शामिल किए जाओगे जब सच्चे भक्त दिव्य इबादत के मार्ग पर उतर जाएंगे, इस तरह के भय और उपस्थिति के साथ अपनी पांच प्रार्थनाओं का भुगतान करें जैसे कि आप अल्लाह तआला सर्वशक्तिमान देखते हैं।

(नूह आध्यात्मिक ख़ज़ायन जिल्द 19 पृष्ठ 15)

फिर आप ने फरमाया कि नमाज़ हर मुस्लिम पर फर्ज़ है। हदीस शरीफ में आया है कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास एक क़ौम ईमान लाई और निवेदन किया कि हे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हम करोबारी लोग हैं हमें क्षमा करें। हमारे लिए पांच बार नमाज़ों को पढ़ना का एक कठिन काम है। मवेशी भी इत्यादि भी हमारे साथ हैं, जो बड़े झुंड हैं जिन को चराते हैं। बाहर का काम है, मेहनत का काम है। कपड़े भी हमारे ख़राब हो जाते हैं इस का भी कोई भरोसा नहीं होता और फिर यह कि इस व्यस्तता के कारण समय भी नहीं मिलता कि पांच नमाज़ें अदा करें तो आप ने उन के जवाब में फरमाया कि देखो, अगर नमाज़ नहीं है तो फिर है क्या। यह धर्म ही नहीं है जिस में नमाज़ नहीं। नमाज़ क्या है? यही के अपनी विनम्रता तथा विनय को अल्लाह तआला के सामने पेश करना और उससे अपनी ज़रूरतों को पूरा करने का कहना, उसी से मांगना। फरमाते हैं कि ख़ुदा तआला की मुहब्बत, उसका डर, उस की याद में दिल लगा रहने का नाम नमाज़ है और यही धर्म है। फरमाते हैं कि जो आदमी नमाज़ से ही आज़ादी हासिल करना चाहता है तो उसने जानवरों से अधिक क्या किया। उस की फिर जानवरों वाली हालत है। वही खाना पीना तथा सोए रहना यह तो धर्म हरगिज़ नहीं यह कुफ्फार की सीरत है।

(उद्धरित मल्फूज़ात, पृश्ठ 253-254 1985 ई प्रकाशन यू. के)

तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने स्पष्ट रूप से फरमा दिया कि जानवर और इन्सान में अन्तर करने वाली चीज़ अल्लाह तआला की इबादत और नमाज़ है। अगर हम में नमाज़ अदा करने की तरफ ध्यान नहीं हो रहा तो हम ख़ुद ही ध्यान कर सकते हैं कि हम किस श्रेणी में आते हैं। कई बार मैं इस पर ध्यान दिला चुका हूं

और ध्यान दिलाता रहूंगा कि यदि नमाज़ सेन्टर या मस्जिद दूर है तो कुछ आस-पास के घर एक साथ निर्धारित कर लें जहां नमाज़ हो सकती है इस से जहां जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ने का सवाब मिलेगा वहां नमाज़ों की तरफ ध्यान भी रहेगा और अगली नस्लों को भी इस बारे में ध्यान रहेगा। और उन का सुधार होता रहेगा। और का भी नमाज़ों की तरफ ध्यान होगा। हम मस्जिद बनाने की तरफ ध्यान कर रहे हैं, मस्जिदें बना रहे हैं अब कल वर्जीनिया में मस्जिद का उद्घाटन किया जाएगा, लेकिन अगर हमारा इबादतों की तरफ ध्यान नहीं है तो इन मस्जिदों के बनाने का क्या फायदा है? मैं बार बार कहता हूँ कि अगर उहदेदार, हर संगठन के उहदेदार और जमाअत के स्तर के उहदेदार हर स्तर पर नमाज़ की हाज़री की तरफ भरपूर ध्यान दें तो हाज़री कई गुना बेहतर हो सकती है और हमारी अगली नस्लों का भी प्रशिक्षण हो सकता है।

नमाज़ के महत्व के बारे में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इस प्रकार का आदेश है जो नि:संदेह हमारे दिलों को हिला देने वाला है। आप फरमाते हैं कि क़यामत के दिन जिस बात का सब से पहले बन्दों से हिसाब लिया जाएगा वह नमाज़ है। अगर यह हिसाब ठीक रहा तो वह सफल होगा और मुक्ति पा ली पहली बात नमाज़ है जिस का बन्दों से हिसाब लिया जाएगा अगर यह हिसाब ठीक रहा तो वह सफल हुआ और मुक्ति पा ली, अगर यह असफल हो गया तो वह असफल हो गया और घाटे में रहा।

(सुनन निसाई किताबुस्सलात बाब अल्मुहासब: अलस्सलात हदीस 466)

तो यह कोई मामूली बात नहीं है कि नमाज़ पर ध्यान देने का जो अधिकार है वह अदा न किया जाए। अल्लाह तआला हर अहमदी को यह हक़ अदा करने की तौफ़ीक़ प्रदान करे और हक केवल फर्ज़ नमाज़ों से ही अदा नहीं होगा बल्कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि तहज्जुद और नफिल पढ़ने की तरफ भी ध्यान होना चाहिए।

(मल्फूज़ात जिल्द 3 पृष्ठ 245 संस्करण 1985 ई मुद्रित यू.के)

और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि तुम्हारे फर्ज़ नमाज़ों में जो कुछ कमी रह जाती है इन्हें नफ्लों को माध्यम से पूरी कर देता है।

(सुनन अन्निसाई किताबुस्सलात बाब अल्मुहासब: अलस्सलात हदीस 466)

अगर नफ्लों की आदत हो। अत: नफ्लों और तहज्जुद को अदा करना भी एक प्रमुख चीज़ है इस की तरफ ध्यान होना चाहिए।

फिर सबसे अहम चीजों में से एक जिस पर प्रत्येक अहमदी की नज़र होनी चाहिए। वह अल्लाह तआला से अपने गुनाहों की माफी मांगने की तरफ ध्यान केंद्रित करना है। आदमी कमज़ोर है। कई बार ग़लतियों से बचने की कोशिश के बावजूद त्रुटियाँ हो जाती हैं और अल्लाह तआला ऐसा नहीं है कि अपने बन्दों की केवल त्रुटियों को पकड़ने वाला है और सज़ा देने वाला है या उस ने उन्हीं पर नज़र रखी हुई है। लेकिन अल्लाह तआला ने हमें इन ग़लतियों की माफी और भविष्य के गुनाहों से बचने का तरीक़ा भी बताया हुआ है और वह इस्तिग़फार है। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अल्लाह तआला ऐसा नहीं कि लोगों को अज़ाब दे जबकि वह इस्तिग़फार कर रहे हों। (अन्फाल: 34)

कुछ लोग भी इस्तिग़फार करने वाले हों तो कई लोगों की सज़ा माफ हो जाती है उनकी वजह से दूसरे भी बचाए जाते हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस बारे में फरमाते हैं कि कुछ आदमी ऐसे हैं कि उन्हें गुनाह की ख़बर होती है और कुछ ऐसे हैं कि उन्हें गुनाह की ख़बर नहीं होती। इसलिए अल्लाह तआला ने हमेशा के लिए इस्तिग़फार का प्रावधान रखा है। ख़बर हो या न हो इन्सान इस्तिग़फार करता रहे कोई पता नहीं कि किस समय क्या ग़लती हो रही है। अन्जाने में गुनाह हो रहे हैं। फरमाया कि इस्तिग़फार का प्रावधान करवाया है कि इंसान प्रत्येक गुनाह के लिए चाहे वह प्रकट हो चाहे भीतर का हो, उसे ज्ञान हो या न हो और हाथ और पैर और ज़बान और नाक और कान और आंख और सब प्रकार के गुनाहों से इस्तिग़फार करता रहे। अर्थात मनुष्यों के सभी जो अंग हैं, वे गुनाह का माध्यम बन जाते हैं। इसलिए, हर एक अंग को गुनाह से बचाने के लिए इस्तिग़फार करते रहो। गुनाह का माध्यम बन जाते हैं इसलिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यह दुआ सिखाई कि इस ज़माने में, जो आजकल का ज़माना है कुरआन करीम की यह दुआ पढ़ते रहना चाहिए और वह दुआ

رَبَّنَا ظَلَمْنَآ اَنْفُسَنَا وَاِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ

(मल्फूज़ात जिल्द 4 पृष्ठ 275)

कि ऐ अल्लाह हम ने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया यदि तू हमें न बख्शेगा और हम पर दया न करेगा तो हम नुक्सान उठाने वालों में से हो जाएंगे।

رَبَّنَا ظَلَمْنَآ اَنْفُسَنَا وَاِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ

(अल आराफ़ 24 :)

आप फ़रमाते हैं कि "जब अल्लाह तआला से शक्ति मांगे अर्थात इस्तिग़फार करें तो रूहुल कुदुस के समर्थन से उनकी कमज़ोरी दूर हो सकती है।"

(कश्ती नूह रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 19 पृष्ठ 34)

फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने मानने वालों के लिए यह भी बुनियादी शर्त रखी है कि वे बन्दों के अधिकारों को अदा करने वाले हों और अल्लाह तआला की सृष्टि को किसी प्रकार का कष्ट पंहुचाने से बचें।

(इज़ाला औहाम जिल्द 3, सफ़ा 564)

आप ने हमें हर समय अपने दिलों को टटोलते हुए ध्यान दिलाते हुए फरमाया कि क्या तुम्हारे अंदर अल्लाह तआला का डर, उसका भय और उसके परिणाम में उस की सृष्टि की सहानुभूति और खैरख्वाही है ? एक हदीस में आता है कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया, "आपस में हसद मत करो। आपस में द्वैष न रखो। एक दूसरे के साथ से दुश्मयिां मत रखो। और तुम में से कोई एक दूसरे के सौदे पर सौदा न करे। आपस में भाई भाई बन जाओ। मुस्लमान अपने भाई पर ज़ुल्म नहीं करता। यह उसे तुच्छ नहीं जानता। किसी आदमी की बुराई के लिए इतना ही काफी है कि वह अपने मुसलमान भाई को तुच्छ जाने। प्रत्येक मुसलमान पर दूसरे का ख़ून, माल तथा सम्मान हराम है।

(सही मुस्लिम किताबुलबिर्रे वस्सीलाते हदीस 6541)

यह वह बात है जो आज सबसे अधिक हम अहमदियों से प्रकट होनी चाहिए और अल्लाह तआला की कृपा से काफी हद तक हो रही है। अगर सभी मुसलमान आज इस तथ्य को समझ लें और उस पर अमल करने वाले हों और मुसलमानों की सरकारें इस पर अमल करने वाली हों तो आजकल मुसलमान मुसलमान पर जो अत्याचार करके उनके जान-माल को नष्ट कर रहा है, हज़ारों बच्चे अनाथ हो रहे हैं, लाखों महिलाएं विधवा हो रही हैं, बूढ़े मर रहे हैं ये कुछ भी न हो।

फिर अहंकार एक बहुत बड़ी बुराई है, जिस से बचने की अल्लाह तआला ने हमें कुरआन में हमें हिदायत दी है। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस बारे में बहुत ध्यान दिलाया आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जिसके दिल में राई के दाने के बराबर भी अहंकार होगा वह जन्नत में नहीं जा सकेगा।

(सही मुस्लिम किताबुल ईमान हदीस 267)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि:

"मेरे निकट पवित्र होने का इस से उत्कृष्ट तरीका और संभव नहीं कि इससे बेहतर कोई और तरीके मिल सके कि इन्सान किसी प्रकार का अहंकार और गर्व न करे न ज्ञान का, न परिवार का, न वित्तीय।"

(मल्फूज़ात जिल्द 7 पृष्ठ 276.प्रकाशन 1985 ई मुद्रित यू.के)

फिर आप फरमाते हैं: "मैं अपनी जमाअत को नसीहत करता हूँ कि अहंकार से बचो क्योंकि अहंकार हमारे प्रताप वाले ख़ुदा तआला की आंखों में बहुत अधिक मकरूह है।"

(मुज़ूलुल मसीह रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 18 पृष्ठ 402)

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी हज्जतुल विदा के अवसर पर फरमाया था कि सभी इंसान चाहे किसी क़ौम और जाति के हों तो इन्सान होने की दृष्टि से एक हैं। और काले को गोरे पर और गोरे को काले पर और अरब को ग़ैर अरब पर और ग़ैर अरब को अरब पर कोई प्राथमिकता नहीं है ।

(अल्जामेअ लेशुअबुल ईमान भाग 7, पृष्ठ 132 हदीस 4774 मक्तब: अर्राशेद प्रकाशन 2003)

अत: हमारे लिए, यह विनम्रता की यह शिक्षा है, बराबरी की यह शिक्षा है। गर्व और अहंकार से बचने की शिक्षा है, जिस पर प्रत्येक को पालन करना चाहिए। ग़ैर-मुस्लिम दुनिया में तो, सफेद काले का अंतर किया जाता है, और अब ये दावे कुछ सफेद नेताओं को भी बनाते हैं कि सफेद रंग वालो की क्षमताएं और शक्तियां ग़ैर सफेद वालों से अधिक हैं। यह उनके अहंकार की हालत है। हर अहमदी को इससे बचने की कोशिश करनी चाहिए।

अमेरिका में दो अलग-अलग मौकों पर मेरे साथ मज्लिसों में यहां अमेरिका की लड़कियों की तरफ से वर्णन किया गया है कि जमाअत में किसी प्रकार का नस्लीय भेदभाव किया जाता है। अगर किसी कारण से युवाओं में यह विचार पैदा हुआ है, तो यह बहुत ग़लत है। लज्ना को भी, ख़ुद्दाम को भी, अंसार को भी और जमाअत

के तरबियत निज़ाम को भी इस की भी समीक्षा करनी चाहिए कि यह प्रश्न क्यों उठ रहे हैं। और यदि इस में कोई सच्चाई है, तो ज्ञान और स्नेह के साथ, हमें इन विचारों और भावनाओं को दूर करने की कोशिश करनी चाहिए। और तरबियत भी करनी चाहिए। किसी भी संगठन या उहदेदार को शीघ्रता से इस बारे में काम लेने या निर्णय लेने की आवश्यकता नहीं है, या इस तलाश में न पड़ जाए कि किस ने कहा बल्कि यह देखें कि यह वास्तविकता है या नहीं। तो यह देखा जाना चाहिए कि वास्तविकता है या नहीं, अगर नहीं है तो सवाल क्यों उठाए गए हैं? इन चीज़ों के पैदा होने का कोई व्यक्तिगत कारण तो नहीं हैं। बहरहाल जो भी कारण हैं प्रेम और हिक्मत से हमें अपने भीतर से इस बुराई को दूर करना चाहिए। यहां भी जिस बच्ची ने मुझे बताया था उसे भी मैंने कहा है कि मुझे लिख कर भेजे कि किस कारण से तुम्हारे अन्दर यह विचार पैदा हुआ है कि जमाअत में नस्ली भेद पैदा हो रहा है। बहरहाल यह भी एक तरह का अंहकार है और हम ने हर तरह कि अंहकार से बचना है।

एक बात जिस की तरफ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम ने ध्यान आकर्षित कराया और जिसके बारे में अल्लाह तआला ने आदेश दिया है और आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उपदेश भी हैं वह वित्तीय कुर्बानी है। अल्लाह तआला की कृपा के साथ, दुनिया भर की जमाअतें वित्तीय कुर्बानी में बढ़ रही हैं। आपातकालीन और समय पर वित्तीय कुर्बानी में, अमेरिका की जमाअतें भी अल्लाह तआला की कृपा में भाग लेने की कोशिश करती हैं, लेकिन जो चन्दा आमद आदि की एक नियमित वित्तीय प्रणाली है, और इस में यहां जो आंकड़े सामने आते हैं या यहां आ रहे हैं। इस को देखने से पता लगता है कि बहुत कमी है। इस तरफ ध्यान देने की ज़रूरत है। एक ग़रीब व्यक्ति तो अपनी विवशता बता कर चन्दा में कमी कर सकता है या शरह कम करने के लिए कह सकता है या आज्ञा ले सकता है परन्तु जो अच्छी आय वाले लोग हैं इन को अपनी समीक्षा करनी चाहिए कि वे अपनी आय के अनुसार चन्दे दे रहे हैं या नहीं। यह सिर्फ इतना नहीं है कि टेक्स देने के लिए बहुत सारी कटोती भी कर लते हैं चन्दे के लिए भी कर लें अपनी आय को देखें क्योंकि यह चन्दा का मामला ख़ुदा तआला के साथ है। सैक्रेटरी माल या निज?ां को तो पता नहीं है कि किस की आय क्या है जो चन्दा दे रहे हैं। परन्तु ख़ुदा तआला को पता है। वह तो दिलों की हालत जानता है। यदि सही सरह से चन्दा देना शुरू करें तो मैं समझता हूं कि मस्जिदों के निर्माण और अन्य जमाअत के कार्यों के लिए फिर बहुत कम जमाअत की तहरीक करनी होगी। तो इस दृष्टि से अपनी समीक्षा करें और अपने चन्दा आम का दोबारा समीक्षा कर के बजट लिखवाएं। जिन्होंने कम लिखवाएं हैं।

मैं विभिन्न देशों के नए अहमदियों की घटनाऐं भी वर्णन करता रहता हूं कि किस प्रकार अहमदियत स्वीकार करने के बाद वे अपने अन्दर परिवर्तन पैदा कर रहे हैं, आध्यात्मिक परिवर्तन भी पैदा कर रहे हैं और व्यावहारिक रूप से इबादत और वित्तीय कुर्बानी पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं इस के महत्व को समझ रहे हैं। और फिर अल्लाह तआला भी बावजूद इन की ग़रीबी कि उन्हें वित्तीय लाभ दे रहे हैं, और यही कारण है कि वे अपने ईमान और ईमानदारी में बढ़ रहे हैं। "कुर्बानी" का शब्द ही स्पष्ट रूप से यह प्रकट करता है कि आपने आप का कष्ट में डाल कर कोई काम करना और यहां कष्ट में डाल कर अल्लाह तआला के धर्म के लिए देना है। अत: जो अपनी सुविधा से थोड़ा बहुत देकर समझते हैं कि हम ने कुरबानी की उन्होंने कुरबानी नहीं कि न ही इस प्रकार के लोगों को अल्लाह तआला पर कोई उपकार होता है। अगर वे न भी दें तो भी अल्लाह तआला धर्म की जरूरत को पूरा करने का साधन करेगा। और करता है और करता रहेगा इन्शा अल्लाह। लिए बहुत पैसा देकर, हम समझते हैं कि हमारे पास कुर्बानी का कुर्बानी नहीं है, इसलिए, मैं उन लोगों पर जो सामर्थ्य होने के बावजूद अपनी आय के अनुसार चन्दा नहीं देते ध्यान दिलाना चाहता हूं ताकि वे अल्लाह तआला के फज़्लों के वारिस बनें।

आख़री बात जिस पर मैं ध्यान केंद्रित करना चाहता हूं वह आज्ञाकारिता है। कुरआन में कई स्थानों पर अल्लाह तआला और उसके रसूल की आज्ञापालन करने का आदेश आया है और फिर तुम में से जो हुकूमत कर रहे हैं उन के आदेश को मानने का हुक्म है । फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम ने भी अपनी बैअत की शर्तों में आज्ञापालन के बारे में शर्त रखी है बैअत की शर्तों में शर्त रखी है कि इताअत दर मअरूफ पर मरते दम तक दृढ़ रहूंगा।

(उद्धरित इज़ाला औहाम रूहानी ख़ज़ायन, भाग 3, पृष्ठ 564)

हमारी, विभिन्न संगठनों के जो अहद हैं इन अहदों में यह शब्द हैं कि ख़लीफा वक्त जो भी मअरूफ फैसला फरमाऐंगे उस ीक पाबनी करना ज़रूरी समझूंगा। कुछ टेड़े मिज़ाज लोग या मुनाफिक लोग यह यह सोच रखते हैं कि माअरूफ फैसलाम पर वादा है। और कुछ कहते हैं कि समय कि ख़लीफा के कुछ फैसले माअरूफ होते हैं और कुछ उन की नज़र में मअरूप नहीं होते। यह तावीलें भी प्रस्तुत कर देते हैं दुनिया में विभिन्न स्थानों पर यह सोच है। बेशक अगर एक दो ही हों एक लाख में से परन्तु उन की सोच का रद्द करना ज़रूरी है क्योंकि नौजवान नस्ल को यह सोय ज़हर वाला कर देती है। अगर इस तरह से कोई मअरूफ फैसला की व्याख्या करने लग जाए तो फिर जमाअत की एकता स्थापित नहीं रह सकती। फिर इस बात पर बहस हो जाएगी कि मअरूफ क्या है और ग़ैर मअरूफ क्या है।। हज़रत ख़लीफतुल मसीह अव्वल एक स्थान पर इस की व्याख्या करते हुए फरमाते हैं कि

" एक अन्य ग़लती है वह इताअत दर मअरूफ के समझने में है।" कि मअरूफ निर्णय का पालन करना। फ़रमाया कि "जिन कामों को हम मअरूफ नहीं समझते इसमें पालन न करेंगे। " आप फरमाते हैं कि " यह शब्द नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए भी आया है। " और कुरआन में आता है कि "وَلَا يَعْصِيْنَكَ فِيْ مَعْرُوْفٍ "और मअरूफ बातों में तेरी अवज्ञा नहीं करेंगे। आप फरमाते हैं कि " अब क्या ऐसे लोगों ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दोष की भी कोई सूची बना ली है। "

(हकायकुल फुरकान जिल्द 4 पृष्ठ 75-76 आयत अल्मुमतहिन: 13 के अन्तर्गत)

कि कौन सी बात आप सहीह कहेंगे और कौन सी चीज़ आप ग़लत कहेंगे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अम्र बिल मारूफ़ की यह व्याख्या फरमाते हैं कि

" यह नबी इन बातों के लिए आदेश देता है जो बुद्धि के ख़िलाफ नहीं हैं।"

(बराहीन अहमदिया भाग पंचम रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 21 पृष्ठ 420)

यानी मअरूफ बातें वे हैं जो बुद्धि के विपरीत नहीं हैं और वे कुरआन के आदेशों के अनुसार भी हैं। फिर, एक हदीस में, घटना आई है कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक जगह पर एक काफिला भेजा। वहां पहुंच कर अक स्थान पर लोगों ने आग लगाई जो अमीर काफिला थी उस ने मज़ाक में कहा कि अगर मैं तुम्हें इस आग में कूदने का आदेश दूं तो क्या कूद जाओगे? कुछ लोगों ने कहा कि यह बिल्कुल ग़लत बात है, यह तो ख़दकुशी है। कुछ ने कहा कि अमीर की इताअत ज़रूरी है। लेकिन बाद में उसने कहा कि मैं मज़ाक़ कर रहा था। मामला खत्म हो गया है जब वह मदीना लौट आए तो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह घटना बताई तो आप ने फरमाया कि अमीरों में से जो तुम्हें अल्लाह तआला की नाफरमानी का आदेश दे इस की इताअत न करो।

(सुनन अबी दाऊद किताबुल जिहाद हदीस 2625)

यह मअरूफ का विवरण है कि जो अल्लाह तआला का हुक्म है उसके ख़िलाफ अगर आदेश है तो वह मअरूफ नहीं है। लेकिन जो लोग अल्लाह तआला और उसके रसूल के आदेश हैं, उनके अनुसार आदेश हैं तो मअरूफ हैं। और फिर यह स्पष्ट हो गया कि इताअइत दर मअरूफ या मअरूफ फैसले की पाबन्दी ज़रूरी है वे अल्लाह तआला के आदेश हैं अत: जब तक आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

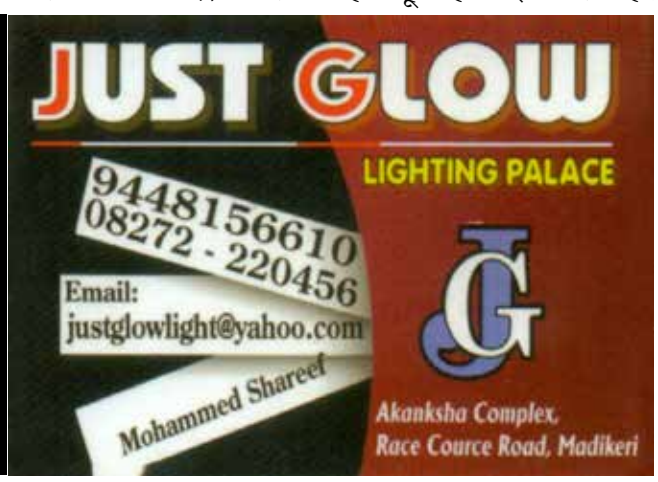

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

वसल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार ख़िलाफत स्थापित है और यह इन्शा अल्लाह क़यामत तक रहनी है तो यह ख़िलाफत जो कभी भी अल्लाह तआला और उसके रसूल की आज्ञाओं के ख़िलाफ फैसला नहीं करेगी, जो कुरआन और सुन्नत है यह उस के अनुसार ही चलेगी।

यह शब्द इताअत दर मअरूफ या मअरूफ फैसला की इताअत करना आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए भी अल्लाह तआला ने कुरआन करीम में प्रयोग किए हैं। जैसा कि वर्णन हुआ है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम ने भी अपनी बैअत की शर्तों में इस को रखा है। और अहमदिया ख़िलाफत में भी हर वादा में इस को शामिल किया गया है। इस का अर्थ स्पष्ट है कि अल्लाह तआला के आदेशों को जारी करना और जमाअत को इस की नसीहत करना और हर आदमी जो अपने आप को जमाअत का हिस्सा समझता है उस का फर्ज़ है कि इस वादा की पाबन्दी करते हुए समय के ख़लीफा की जो जमाअत के बारे में हिदायतें हैं इन पर अनुकरण करे। हज़रत मुस्लेह मौऊद ने भी यही फरमाया है कि यह कभी नहीं हो सकता अगर कोई ग़लत हिदायत होगी भी तो क्योंकि अल्लाह तआला ने ख़िलाफत की हिफाज़त करनी है इस के लिए इस के परिणाम अल्लाह तआला कभी बुरे नहीं होने देगा और इस प्रकार के हालात पैदा करेगा इस के बेहतर परिणाम पैदा हों।

(उद्धरित तफसीर कबीर जिल्द 6 पृष्ठ 376 -377)

इसलिए मअरूफ फैसला की व्याख्या करना किसी इन्सान का काम नहीं है मअरूफ फैसला वह है जो कुरआन के अनुसार है और सुन्नत के अनुसार है और हदीस के अनुसार है और इस युग के हकम तथा अदल के आदेशों के अनुसार है। और यही वह तरीका है जिसके माध्यम से जमाअत की एकता स्थापित रह सकती है। और यही वह उद्देश्य है जिसके लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम भेजे गए थे कि मुख़लेसीन तथा ईमानदार लोगों की एक जमाअत पैदा हो। वरना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया है कि मुझे उन लोगों की संख्या वृद्धि करने की ज़रूरत नहीं है जो मेरे साथ शामिल होते रहते हैं लेकिन इताअत करना न जानते हों। आपने फ़रमाया कि अगर मेरी तरफ सम्बंधित होने वालों और मेरी बैअत में आने वालों का सुधार नहीं होता और वह अल्लाह तआला और उस के रसूल की शिक्षा के अनुसार अपना जीवन नहीं बिताते तो ऐसी बैअत व्यर्थ है।

(उद्धरित मवाहेबुर्रहमान रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 19 पृष्ठ 276) (मल्फूज़ात जिल्द 6 पृष्ठ 142, मल्फूज़ात जिल्द 10 पृष्ठ 334)

अत: हमारे अहमदी होने का लाभ तभी है जब हम इस वास्तविकता को समझ कर उस पर अमल करने की कोशिश करें। अपनी सभी क्षमताओं के साथ प्रयास करें। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम ने फरमाते हैं कि

"इताअत कोई छोटी सी बात नहीं और सुविधाजनक बात नहीं। " यह कोई इतना आसान काम नहीं है।" यह भी एक मौत होती है ... "

(मल्फूज़ात जिल्द 4 पृष्ठ 74 हाशिया प्रकाशन 1985 ई मुद्रित यू.के)

जो व्यक्ति पूरे रूप में आज्ञाकारिता नहीं करता वह इस सिलसिला को बदनाम करता है। "

(मल्फूज़ात जिल्द 4 पृष्ठ 74.प्रकाशन 1985 ई मुद्रित यू.के)

आप फरमाते हैं कि " मैंने कई बार अपनी जमाअत को कहा है कि आप केवल इस बैअत पर ही भरोसा न करना इस वास्तविकता तक जब तक नहीं पहुंचोगे," अर्थात बैअत के वास्तविकता तक "तब तक मुक्ति नहीं।"

(मल्फूज़ात जिल्द 4 पृष्ठ 232-233 प्रकाशन 1985 ई मुद्रित यू.के)

अल्लाह तआला हम सबको इस्लाम की वास्तविक शिक्षा को समझते हुए इस पर अमल करने की तौफ़ीक़ प्रदान करे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आने के हक को अदा करने वाले हों और हमेशा ख़िलाफत की पूरी आज्ञाकारिता के साथ जुड़े रहें और समय के ख़लीफाके सभी मअरूफ फैसलों पर सच्चे दिल के साथ और पूर्ण आज्ञाकारिता के साथ पालन करने वाले हों अल्लाह तआला सब को इस की तौफीक़ प्रदान करे।

☆ ☆ ☆
☆ ☆
☆

पृष्ठ 1का शेष

के दर्शन नहीं करा सकता वह झूठा है, प्रत्येक धर्म जिसमें प्राचीन कहानियों के अतिरिक्त और कुछ नहीं वह झूठा है। ख़ुदा जैसा पहले था वैसा अब भी है, उसकी शक्तियां जैसी पहले थीं वैसे अब भी हैं, उसका निशान दिखलाने पर जैसा पहले अधिपत्य था वैसा अब भी है। फिर तुम क्यों केवल कहानियों पर राज़ी होते हो? उस धर्म का विनाश हो चुका है जिसके चमत्कार मात्र कहानियां हैं, जिसकी भविष्यवाणियां मात्र कहानियां हैं। और उस जमाअत का विनाश हो चुका है जिस पर ख़ुदा नहीं उतरता और जो विश्वास द्वारा ख़ुदा के हाथ से पवित्र नहीं हुई। जिस प्रकार मनुष्य भोग-विलास की वस्तुएँ देखकर उनकी ओर खींचा जाता है इसी प्रकार मनुष्य अब आध्यात्मिक सुख का सामना विश्वास द्वारा प्राप्त करता है तो वह ख़ुदा की ओर खींचा जाता है, और उसका सौन्दर्य उसको ऐसा मुग्ध कर देता है कि अन्य समस्त वस्तुएँ उसको बेकार दिखाई देती हैं। मनुष्य उसी समय गुनाह से सुरक्षित रह पाता है जब वह ख़ुदा और उस के शौर्य, प्रताप, बदला देने और दण्ड-विधान पर निश्चित रूप से अवगत होता है। प्रत्येक उद्दण्डता की जड़ अनभिज्ञता है। जो मनुष्य ख़ुदा की निश्चित आध्यात्मिक विद्या से कुछ हिस्सा लेता है वह उद्दण्ड नहीं रह सकता। यदि घर का मालिक जानता है कि एक भयंकर बाढ़ ने उसके घर की ओर मुंह किया है या उसके घर के इर्द-गिर्द आग लग चुकी है और मात्र थोड़ा सा स्थान शेष है, तो वह इस घर में ठहर नहीं सकता। फिर तुम ख़ुदा के प्रतिफल देने के नियम और दण्ड विधान पर विश्वास का दावा करके अपनी भयानक हालतों पर क्योंकर ठहर रहे हो। अत: तुम आंखें खोलो और अल्लाह के उस विधान को देखो जो समस्त संसार में लागू है। चूहे मत बनो जो नीचे की ओर जाते हैं अपितु ऊपर उड़ने वाले कबूतर बनो जो आकाश की बुलंदियों को अपने लिए पसंद करता है। तुम गुनाहों के परित्याग की बैअत करके फिर गुनाह पर स्थिर न रहो और सांप की भांति न बनो जो खाल उतारकर फिर भी सांप ही रहता है। मृत्यु को स्मरण रखो कि वह तुम्हारे पास आती जाती है और तुम्हें उसकी कोई सूचना नहीं।

(रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 19 पृष्ठ 66 से 68)

☆ ☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْأَقَاوِيْلِ لَأَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ

(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वह कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बद्ध कर देता तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह उसकी जान की शिरा काट देते।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे अधिकतर उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित की गई है। किताब प्राप्त करने के इच्छुक दोस्त पोस्ट कार्ड/मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**

Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186

Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab

For On-line Visit :www.alislam.org/urdu/library/57.html

हज़रत का'अब बिन मालिक की तौबा

हज़रत अब्दुल्लाह बिन का'अब अपने पिता हज़रत का'अब पुत्र मालिक का वर्णन करते हुए बताते हैं कि मैंने अपने बाप से वह घटना सुनी जिसका संबंध तबूक की जंग में शामिल न होने और इस कारण से बोलचाल बंद होने की सज़ा पाने से था। उन्होंने कहा कि मैं किसी जंग में आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ जाने में पीछे नहीं रहा था। केवल तबूक की जंग में यह गलती हुई। हां बदर की जंग में शामिल न हो सका था। लेकिन इस अवसर पर आप ने किसी पीछे रहने पर नाराज़गी व्यक्त नहीं की थी। दरअसल उस समय रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और मुसलमान क़ुरैश के क़ाफिला को रोकना चाहते थे और लड़ाई का इरादा नहीं था। इसलिए बहुत से लोगों ने आप के साथ जाने की ज़रूरत महसूस नहीं की और न ही हुज़ूर ने इसके लिए कोई विशेष तहरीक फ़रमाई थी। लेकिन अल्लाह तआला ने मुसलमानों और उनके दुश्मन अर्थात क़ुरैश की संयोग से बिना अल्टीमेटम या पूर्व इरादा के मुठ भेड़ करा दी। लेकिन मैं "लैलतुल अक़बह" बैअत में शामिल था जबकि हम ने इस्लाम स्वीकार किया था और इस में आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मदद का समझौता तय हुआ था और मुझे इस अवसर पर उपस्थिति इतनी पसंदीदा और महबूब है और उस पर इतना गर्व है कि इस की तुलना में बद्र के अवसर पर अनुपस्थिति की अधिक ख़लिश महसूस नहीं करता हालांकि बद्र की चर्चा लोगों में बैअत अक़बह की घटना से अधिक है। बहरहाल तबूक की जंग के लिए आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ न जा सकने की यह वजह नहीं थी कि मुझे कोई कमज़ोरी या वित्तीय तंगी थी। बड़ी अच्छी सेहत और खूब धनी था और अपनी दो सवारियां भी थीं। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का तरीका यह था कि जब जंग पर जाने का इरादा करते तो उसके कार्यक्रम को काफी हद तक छुपा कर रखते और जिधर जाना होता इसके उलट दिशा यात्रा शुरू करते थे। बहरहाल तबूक की जंग के लिए जब आप निकले तो उस समय बड़ी सख़्ती थी। बड़ा लंबा सफर था। सुनसान रेगिस्तान से गुज़रना था। बहुत बड़े लश्कर का सामना था। इसलिए मुसलमानों पर आपने इस स्थिति की गंभीरता और महत्त्व अच्छी तरह स्पष्ट कर दी थी ताकि वह इस युद्ध के लिए ख़ूब तैयारी कर लें और किसी के लिए कोई बहाना शेष न रहे। आपने स्पष्ट रूप से बता दिया कि आप कहाँ जाने का इरादा रखते हैं। आप इस जंग के लिए निकले तो कई मुसलमान जिनकी सूची किसी रजिस्टर में दर्ज नहीं थी आपके साथ हो गए। लोगों की अधिकता के कारण ऐसा संभव था कि जो व्यक्ति आपके साथ न जाना चाहता था वह अपनी इस अनुपस्थिति को छुपा सकता था सिवाय इसके कि उसके विषय में अल्लाह तआला से कोई वह्यी प्रकट हो। अत: आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब इस लड़ाई के लिए निकले तो फल पक्के हुए थे और तीव्र गर्मी के कारण छाया अच्छी लगती थी और मेरा दिल आराम की ओर इच्छुक था और मुझे अपनी फसलों का भी ख़याल था। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बड़ी तैयारी की हुई थी और मुसलमानों का बड़ा लश्कर आपके साथ था। मैंने कई बार इरादा किया कि तैयारी करके आपसे जा मिलूं लेकिन इसे अमली जामा न पहुँचा सका और इस असमंजस में कोई काम भी सही अर्थों में न हो सका। बहरहाल मैंने सोचा जब चाहूँगा आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से जा मिलूंगा। इस सुस्ती ने मुझे रोके रखा। यहां तक कि लश्कर तेज़ चलने की वजह से बहुत दूर चला गया और मैं इरादे में ही बंधा रह गया। काश मैं अपने इरादे को अमली जामा पहना सकता। लेकिन यह मेरा भाग्य नहीं था। रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के जाने के बाद जब भी मैं घर से निकलता तो मुझे इस बात का सख्त अफसोस होता कि मेरी तरह कोई और आदमी पीछे नहीं रहा था। सिवाय ऐसे आदमियों के जिन पर मुनाफकत का संदेह था या कुछ विकलांग लोग थे। बहरहाल रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सफर के दौरान मुझे याद न फरमाया यहां तक कि आप तबूक पहुँच गए। एक बार आप वहाँ लोगों में बैठे थे कि आपने फरमाया का'अब को क्या हो गया अर्थात वह क्यों नहीं आया। इस पर क़बीला बनी सलमाह के एक आदमी को मेरे ख़िलाफ कुछ कहने का मौका मिल गया और कहा उस को चादरों के घमंड ने रोक लिया होगा। तब मुआज़ बिन जबल ने उस आदमी को कहा तुमने बहुत बुरा किया कि ऐसा संदेह किया। हे अल्लाह के रसूल! ख़ुदा तआला की कसम! हम तो क' अब को बड़ा नेक और अच्छा आदमी समझते हैं। उस पर रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम्म चुप रहे। इस बीच हुज़ूर ने एक आदमी जो सफेद कपड़े पहने हुए था दूर से आते हुए देखा आपने बतौर आरज़ू और दुआ फरमाया ख़ुदा तआला करे यह अबू खसीमह हो। ख़ुदा तआला की क़ुदरत वह अबू ख़सीमह ही निकले। यह वह सहाबी हैं जिन्होंने खजूर का एक साअ (अरब का वज़न नापने का पैमाना) बतौर दान दिया था और मुनाफकीन ने उसकी हँसी उड़ाई थी। का'अब कहते हैं कि जब यह ख़बर पहुंची कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तबूक से वापस तशरीफ़ ला रहे हैं तो मुझे सख्त अफसोस हुआ और बहाने सोचने लगा कि कैसे आपकी नाराज़गी से बच सकतो हूं। मैंने अपने घर के सभी समझदार लोगों से सलाह भी की। आख़िर जब आप मदीना के क़रीब पहुंच गए तो अल्लाह तआला ने सभी झूठ विचारों को मेरे दिल से निकाल दिया और मैं समझ गया कि आपकी नाराज़गी से मुझे कोई नहीं बचा सकता। इसलिये मैंने पक्का इरादा कर लिया कि सच बोलूंगा। सुबह के समय आप वापस मदीना पहुंचे। आप का तरीका था कि जब आप सफर से वापस तशरीफ़ लाते तो पहले मस्जिद में जाते। वहां मस्जिद में दो रकअत नफिल पढ़ते फिर लोगों से बातें करने के लिए कुछ देर बैठते। इस सफर में भी आपने ऐसा ही किया। पीछे रहने वाले बहुत से लोग माफी मांगने आए और कसम खाने लगे कि इसलिए हम शामिल नहीं हो सके थे। यह रोक थी और वह रोक थी। यह सब लोग 80 से अधिक थे। आपने उन के पेश किए हुए बहाने स्वीकार किए। उनसे फिर बैअत ली। उनके लिए माफी की दुआ की और उनके मन के मामला को ख़ुदा तआला के सुपुर्द कर दिया। जब मैं आया और आपको सलाम किया तो आप ने इस तरीका से तबस्सुम फरमाया जिस में नाराज़गी का पहलू स्पष्ट था। बहरहाल आपने फरमाया। आओ क्या कहते हो। मैं आपके सामने बैठ गया। आप ने पूछा ? तुम क्यों पीछे रह गए थे। क्या तुम ने सवारी नहीं खरीदी थी? मैंने कहा हे अल्लाह के रसूल! अगर आपके अतिरिक्त किसी और के सामने होता तो कोई बहाना करके नाराज़गी से बच जाने का विचार कर सकता था क्योंकि मुझे बातें करना आती हैं। लेकिन ख़ुदा तआला की कसम! मैं यह भी जानता हूँ कि अगर मैं झूठी बात कहकर आप को ख़ुश कर लूं तो हो सकता है कि कल अल्लाह तआला आप को मुझ से नाराज़ कर दे। यदि मैं अभी सच्ची बात कहूं जिसकी वजह से आप नाराज़ हो तो मुझे उम्मीद है कि अल्लाह तआला मेरा अंजाम अच्छा करेगा। सच्ची बात यह है कि मेरे पास कोई बहाना नहीं। इस समय में ख़ूब शक्तिशाली था हर तरह की वित्तीय अवस्था थी और बिना किसी दिक्कत के आपके साथ जा सकता था। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया तुम ने सच बोला है। फिर मुझे संबोधित करते हुए कहा। जाओ अल्लाह तआला तुम्हारे बारे में कोई फैसला करेगा तो फिर बात करेंगे। क़बीला बनी सलमा के कुछ लोग मेरे पीछे आए और मुझे कहने लगे। ख़ुदा की क़सम ! हमारे ज्ञान के अनुसार तुम ने कभी कोई कसूर नहीं किया है। क्यों न तुम ने रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास कोई बहाने पेश कर दिया। जिस तरह दूसरे पीछे रहने वालों ने बहाना पेश किए थे। तुम्हारे अपराध की माफी के लिए रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम्म की तरफ से तेरी माफी की दुआ काफी थी। क' अब कहते हैं। ख़ुदा तआला की कसम ! वह मुझे उकसाते रहे यहां तक कि मैंने एक बार इरादा कर लिया कि मैं आपके पास जाऊं और अपने आप को झुठलाऊं कि जो कुछ पहले कह चुका हूँ वह ग़लत था। फिर मैंने बनी सलमा के लोगों से पूछा कि क्या मेरे और भी साथी हैं जिन्होंने सच बोला हो और कोई झूठा बहाना न किया हो। उन्होंने कहा। हाँ दो आदमियों ने ऐसा किया है और वही कुछ कहा जो तूने कहा है और उन्हें वही कुछ जवाब दिया गया है जो तुझे दिया गया है। मैंने कहा वह कौन हैं? उन्होंने बताया। मरारह बिन रबिया आमिर और हलाल बन उमय्य वाकफी ये दोनों आदमी बहुत नेक थे। बदर की जंग में शामिल हो चुके थे। मेरे लिए उनका नमूना पर्याप्त था। जब लोगों ने उनकी यह घटना मुझे बतलाई तो मैंने मन में इरादा कर लिया कि मैंने जो कुछ रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया है वही ठीक है। सच बोलने में मैं अकेला नहीं हूँ अन्य दो नेक नाम आदमी मेरे साथ हैं। बहरहाल आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने लोगों को हम तीनों से बोलचाल रखने से मना फरमा दिया। हमारे अलावा किसी और पीछे रहने वाले को सज़ा न दी। लोग हम से बचने लगे मानो कि वह बिल्कुल बदल गए हैं। ज़मीन भी बदली बदली से दिखने लगी लगी मानो वह ज़मीन ही नहीं जिसे मैं अच्छी तरह जानता था। अत: बोल चाल बंद होने के पचास दिन सख्त परेशानी और घबराहट में गुज़रे। मेरे दोनों साथी तो घर में रहने लगे और अपने घरों में बैठे रहे। वह हर समय रोते रहते। मैं उन में जवान था और सख्त जान भी। घर बैठ नहीं सकता था इसलिए बाहर बाज़ार में निकल आता। नमाज़ में मुसलमानों के साथ शामिल होता, बाज़ारों में घूमता फिरता लेकिन मुझ से कोई बात नहीं करता। नमाज़ के बाद कुछ देर आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बैठते तो मैं भी मजलिस में हाज़िर होता और सलाम कहता और दिल में कहता। क्या आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मेरे सलाम के जवाब में अपने होंठ मुबारक हिलाए हैं या नहीं? फिर आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास ही नमाज़ पढ़ने लगता और चोर नज़रों से आप को

देखता। जब मैं अपनी नमाज़ की ओर ध्यान देता तो आप मेरी ओर देखते ओर जब मैं आपकी ओर देखता तो आप अपना रुख फेर लेते और दूसरी तरफ देखने लगते। मुसलमान भाइयों की यह ज़यादती और सूखा व्यवहार मुझ पर बहुत कठिन गुज़रता। मैं सख्त परेशान हो गया। एक बार में अबू कतादा के बग़ीचा की दीवार फांद कर अंदर चला गया। वह मेरे चचेरे भाई लगते थे और मुझे बहुत प्यारे लगते थे। उन्हें मैं ने सलाम किया। ख़ुदा तआला की कसम! उन्होंने मेरे सलाम का कोई जवाब नहीं दिया। मैंने कहा। हे अबू कतादा ! मैं तुझे ख़ुदा तआला की क़सम देता हूँ। क्या तुम नहीं जानते कि रसूल अल्लाह तआला सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से प्यार करता हूँ। लेकिन वह चुप रहे। फिर मैंने उन्हें दोबारा क़सम दी। फिर भी वे चुप रहे। फिर तीसरी बार उन्हें क़सम दी तो उन्होंने कहा अल्लाह तआला और उसका रसूल बेहतर जानते हैं। मेरी आंखों में आंसू आ गए। में पीछे मुड़ा और दीवार फांद कर बाहर आ गया। एक दिन मदीना के बाज़ार में जा रहा था कि पता चला कि शाम के इलाक़ा का एक कबती अर्थात उस क्षेत्र का किसान जो उन लोगों में शामिल था जो मदीना में अनाज बेचने आया था। मेरे बारे में पूछ रहा है। तो लोगों ने मेरी ओर इशारा किया और वह मेरे पास आया। उसने मुझे राजा ग़स्सान का पत्र दिया। मैं ख़ुद लिख पढ़ सकता था। इसलिए मैंने इसे पढ़ा। इसमें लिखा था। बाद सलाम अर्ज़ है कि हमें यह पता चल कर खेद हुआ है कि आप के साथी अर्थात आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तुझ से ज़्यादती की। अल्लाह तआला ने तुम को ऐसा नहीं बनाया कि तुम से ऐसा अपमानजनक व्यवहार किया जाए और तुझे नष्ट कर दिया जाए। हमारे पास आ जाओ हम तुम्हारा बहुत सम्मान करेंगे और हर तरह का विचार रखेंगे। जब मैंने यह पत्र पढ़ा तो मैंने दिल में कहा। यह भी मेरे लिए परीक्षण और इबतला है। वह ख़त लेकर सीधा तनूर के पास गया और इस ख़त को इस में झोंक कर कहा कि यह इसका जवाब है। ऐसे ही कष्टप्रद परिस्थितियों में चालीस दिन बीत गए और मेरे बारे में ख़ुदा तआला की ओर से वही नाज़िल होने में देर होती गई। एक दिन मेरे पास रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का एक क़ासद आया कि हुज़ूर फरमाते हैं तुम अपनी बीवी से अलग हो जाओ, उसके पास रहने की अनुमति नहीं है। मैंने पूछा हुज़ूर की क्या इच्छा है। क्या मैं उसे तलाक दे दूँ या क्या करूँ? क़ासद ने जवाब दिया। केवल यह आदेश है कि तुम उस से अलग रहो। संभोग से बचो। ऐसे ही हुज़ूर ने तेरे अन्य दो साथियों को भी आदेश भिजवाया था। मैंने अपनी पत्नी से कहा तुम अपने माता पिता के पास चली जाओ और वहीं रहो यहाँ तक कि अल्लाह तआला मेरे बारे में कोई फैसला फरमाए। हिलाल बिन उमय्या की पत्नी रसूल अल्लाह तआला सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में आई और कहा कि हिलाल बिन उमय्या बूढ़े हैं और सहारे के मोहताज हैं। अपना काम ख़ुद नहीं कर सकते। उनके पास कोई नौकर नहीं है। क्या आप ना पसंद करते हैं कि मैं उनकी सेवा करूँ। आपने फरमाया केवल सगंत से मना किया है। उसने कहा ख़ुदा तआला की कसम ! इसमें तो हिलने की भी ताकत नहीं है। संभोग का तो सवाल ही पैदा नहीं होता। जब यह घटना हुई है उसी दिन से वह रो रहा है। इसलिए उसे अपने पति के पास रहने की अनुमति मिल गई। मेरे कुछ रिश्तेदारों ने मुझे कहा कि तुम भी जाकर आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अपनी बीवी के बारे में अनुमति ले लो। उम्मीद है तुम को भी अनुमति मिल जाएगी जैसा कि हिलाल बिन उमय्या की पत्नी को अनुमति मिल गई है। मैंने कहा मैं अपनी बीवी के बारे में नहीं पूछूंगा। न जाने हुज़ूर क्या जवाब दें। मैं जवान हूँ। हो सकता है कि कोई ग़लती मुझ से हो जाए। इन्हीं परिस्थितियों में दस दिन और बीत गए। जैसे हमारे बोलचाल बंद के पचास दिन पूरे हो गए। मैं पचासवें दिन सुबह नमाज़ के बाद अपने मकान की छत पर पढ़ कर बैठा हुआ था और अपनी इस स्थिति के बारे में सोच रहा था जिसका वर्णन अल्लाह तआला ने फरमाया है अर्थात ज़मीन बावजूद फैली होने के मुझ पर तंग हो गई थी और ख़ुद अपनी जान से बेज़ार था कि इस बीच में मैं ने एक जोर से पुकारने वाले की आवाज़ सुनी जो "सलअ पहाड़" पर अत्यधिक ज़ोर से कह रहा था। हे का'अब बिन मालिक! तुझे बिशारत हो। मैंने आवाज सुनी तुरंत सिज्दे में गिर गया और मुझे यकीन हो गया कि ख़ुशी और आसानी की घड़ी आ गई है। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सुबह नमाज़ के बाद लोगों को बताया कि अल्लाह तआला ने हम पर रहम किया और उसने हमारी तौबा स्वीकार की है। लोग हमें बिशारत देने के लिए दौड़े। कुछ मेरे साथियों की ओर गए और एक आदमी घोड़े पर सवार होकर मेरी ओर दौड़ा। क़बीला असलम का एक और आदमी दौड़कर सलअ पहाड़ पर चढ़ गया और ज़ोर ज़ोर से पुकारने लगा। घुड़ सवार के पहुंचने से पहले ही उसकी आवाज़ मुझ तक पहुंच गई। जब वह सु:समाचार देने वाला मेरे पास आया तो मैंने ख़ुशी में अपने कपड़े उतार कर उसे पहना दिए। ख़ुदा तआला की कसम! उस दिन मेरे पास वही कपड़े थे। मैं अपने पहनने के लिए दो कपड़े किसी से मांगे और उन्हें पहन कर आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित होने के लिए चल पड़ा। गिरोह दर गिरोह लोग मुझे मिलते और तौबा के स्वीकार होने की बधाई देते और कहते मुबारक हो, ख़ुदा तआला ने तुम्हारी तौबा स्वीकार फरमा ली। जब मैं मस्जिद में दाखिल हुआ तो क्या देखता हूँ कि रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तशरीफ़ फ़रमा हैं। आप के आसपास और लोग भी बैठे हैं। तलहा बिन उबैदुल्लाह दौड़ते हुए आए और मुझ से हाथ मिलाया, मुझे बधाई दी। ख़ुदा तआला की कसम! मुहाजरीन में से केवल यही उठ कर मुझे बधाई देने आए थे और कोई नहीं उठा था। का'इब हज़रत तलहा के इस नेक बर्ताव को उम्र भर न भूले। बहरहाल का' अब कहते है कि मैंने हुज़ूर की सेवा में हाज़िर होकर सलाम किया। आपका चेहरा ख़ुशी की वजह से चमक रहा था। आप ने कहा तुझे यह सबसे अच्छे दिन की बधाई। जब से तुझे तेरी माँ ने पैदा किया है। ऐसा मुबारक दिन तुझ पर कभी नहीं चढ़ा होगा। मैंने कहा। हे रसूलुल्लाह ! क्या आप यह सुसमाचार अपनी तरफ से दे रहे हैं या अल्लाह तआला से यह नेअमत मुझे दी गई है। आपने कहा ख़ुदा तआला से यह सुसमाचार तुझे प्राप्त हुआ है। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब ख़ुश होते तो आपका चेहरा मुबारक चमकने लगता और यूं लगता जैसे चाँद का टुकड़ा है और आपकी इस स्थिति को हम सब जानते थे जब हुज़ूर के पास बैठ गया तो निवेदन किया। हे रसूलुल्लाह ! तौबा स्वीकार होने की ख़ुशी में अपनी संपत्ति छोड़ता हूँ और अल्लाह तआला के हुज़ूर बतौर सदक़ा देता हूँ। आपने फ़र्माया अपना कुछ धन अपने पास रखो। यह तुम्हारे लिए बेहतर होगा। मैंने कहा। अच्छा, मैं ख़ैबर संपत्ति अपने पास रख लेता हूँ। मैं ने हुज़ूर से पूछा। ख़ुदा तआला ने मुझे मेरी सच्चाई की वजह से मुक्ति दी है और हलाकत से बचा लिया है और मेरी तौबा की पूर्ति इस तरह होगी कि भविष्य में मैं हमेशा सच बोलूंगा। ख़ुदा तआला की कसम ! मुझे कोई ऐसा मुसलमान पता नहीं जिस को सच्ची बात कहने में इस तरह की परीक्षा से जूझना पड़ा हो और फिर परिणाम ऐसा शानदार और मुबारक निकला हो। का'अब कहते हैं रसूल अल्लाह तआला सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने यह वादा करने के बाद मैंने आज तक कभी झूठ नहीं बोला। अल्लाह तआला से उम्मीद रखता हूं कि आगे जीवन में भी वह मुझे इस से सुरक्षित रखेगा और हमेशा सच बोलने की तौफ़ीक़ देगा। हज़रत का'अब का बयान है कि सूर: तौबा की इन आयतों में इसी घटना की ओर इशारा है जो कि मेरे साथ घटी कि अल्लाह तआला मुहीजिरों और अंसार पर जिन्होंने तंगी की घड़ियों में आपका पालन और ईमानदारी व वफा का प्रदर्शन किया, रहमत के साथ झुका और इन तीन में भी जो पीछे रहने दिए गए थे यहां तक कि इस इल्ज़ाम में जमीन बावजूद उदार होने के उन पर तंग हो गई इन आयतों में

اِتَّقُوا اللّٰهَ وَ كُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِيْنَ

तक यही विषय है। का'अब भी कहते थे कि इस्लाम लाने के बाद अल्लाह तआला का यह सबसे बड़ा फज़ल था कि उसने मुझे सच बोलने की तौफ़ीक़ दी और उस की बरकत की ओर मेरी रहनुमाई फ़रमाई और हुज़ूर के सामने झूठ बोलने के गुनाह से बच गया। अगर मैं झूठ बोलता तो मैं भी उन्हीं लोगों की तरह मारा जाता जो आपके सामने झूठ बोल कर मारे गए। इन लोगों के बारे में अल्लाह तआला तआला ने जो नाज़िल की इस से इन झूठों के बुरे अंजाम का पता चला। जबकि अल्लाह तआला ने फर्माया: ये लोग अल्लाह तआला की कस्में खाएंगे ताकि जब तुम वापस लौटो तो उनसे दरगुज़र करो इसलिए उनसे दरगुज़र बेशक करो लेकिन वह अपवित्र लोग हैं और उनका ठिकाना जहन्नम है, यह अपने किए की सजा है वह तुम्हारे सामने कसम खाते हैं ताकि आप उन से राज़ी हो जाएं। अगर तुम उनसे राज़ी हो भी जाओ तो अल्लाह तआला ऐसे फ़ासक लोगों से कभी ख़ुश नहीं होगा। का'अब कहते हैं कि पीछे रहने वालों में हम केवल तीन थे जिन्हें सजा मिली। बाकी पीछे रहने वालों का तो आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बहाना स्वीकार कर लिया था। जबकि कस्में खा खा कर उन्होंने क्षमा और माफी मांगी। लेकिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमारे बारे में कोई फैसला न दिया था और अल्लाह तआला की वह्यी नाज़िल होने तक स्थगित रखा था। यहां तक कि अल्लाह तआला ने वह फैसला दिया जिसमें हमारे लिए बरकत ही बरकत थी फर्माया: इन तीन में भी अल्लाह तआला रहमत के साथ लौटा जो पीछे रहने दिए गए अर्थात जिनका मामला लेट कर दिया गया। दरअसल इस आयत में जंग से हमारे पीछे रहने का वर्णन नहीं बल्कि हमारे मामले को अपूर्ण और उसे पीछे डालना मतलब है और इन दूसरे लोगों से अलग व्यवहार का वर्णन है जिन्हों ने आपके सामने कस्में खाईं और तबूक की जंग में शामिल न हो सकने के बहाने पेश किए जिन को हुज़ूर ने स्वीकार कर लिया।

एक रिवायत में यह भी आता है कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जुम्मेरात के दिन चले थे और जुम्मेरात(गुरूवार) के दिन सफर करने को बहुत पसंद करते थे। हुज़ूर जब भी सफर से वापस आते तो चाशत के समय शहर में प्रवेश होते। सबसे पहले मस्जिद में जाते। वहाँ दो रक्'अत नमाज़ पढ़ते और कुछ देर बैठते फिर घर जाते।

(बुख़ारी हदीस का' अब बिन मालिक)

☆ ☆ ☆

समय के ख़लीफा का आज्ञापालन और उस का महत्त्व

पवित्र कुरआन में अल्लाह तआला ने जहां सूरः नूर में मोमीनों से ख़िलाफत का वादा किया है। इस रकू पर अगर एक सरसरी नज़र भी डाली जाए तो यह बात साफ स्पष्ट हो जाती है कि ख़िलाफत के निज़ाम का आज्ञापालन के साथ गहरा सबंध है। इसलिए इस्तिख़लाफ की आयत की चारों आयतों में आज्ञापालन पर ही ज़ोर दिया गया है और वाद वाली आयत में भी वही विषय जारी है। फिर किसी भी कौम या जमाअत की उन्नति की कसौटी इसी पर आधारित है कि इन की आज्ञापालन की कसौटी क्या है। जो कौम या जमाअत आज्ञापालन में जितनी बढ़ी हुई होगी उतनी ही उन्नति उस को हासिल होगी। पहले और पिछलों के नमूने हमारे सामने हैं। उन्होंने आंहज़रत सलल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के आज्ञापालन में स्वयं को फना करके कैसी उन्नितयां प्राप्त कीं और खुदा तआला की निकटता और उसके प्रेम को प्राप्त करने वाले बने।

आज अल्लाह तआला के फज़ल व करम से सय्यदना हज़रत अकदस मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविषयवाणियों के अनुसार जमाअत अहमदिया में ख़िलाफत अला मिनहाज नबुवत (नबी के उपरांत ख़िलाफत का निज़ाम) का बरकतों भरा निज़ाम जारी है और इस के साथ जमाअती निज़ाम भी है। जो ख़िलाफत के अधीन काम करता है और इसी का भाग है। हमारा फर्ज़ बनता है कि हम सम्पूर्ण रूप से ख़िलाफत की आज्ञापालन करें। इसी में हमारी उन्नित है,हमारा जीवन है।

अत: अल्लाह तआला ने जब हम को ख़िलाफत जैसी महान नेअमत दी है तो हमारा भी यह फर्ज़ बनता है कि हम इसका सम्मान करें और अपने भीतर पवित्र परिवर्तन पैदा करें और अपनी हालतों को बेहतर से बेहतर बनाने की तरफ विशेष ध्यान दें। तभी हम मुहब्बत का हक़ अदा कर सकतें हैं।

ख़िलाफत ने इंशा अल्लाह क़यामत तक जमाअत में स्थापित रहना है, जैसा कि अल्लाह तआला का वादा है और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी फरमाया है लेकिन हमारा फर्ज़ बनता है कि हम ख़िलाफत के साथ मज़बूती के साथ चिमटे रहें,इस का सम्मान करें। इसके साथ पूर्ण रूप से जुड़े रहें। पूर्ण रूप से समय के ख़लीफा और उस की तरफ से जारी किए हुए निज़ाम का पालन करें और कोई एसा काम हमसे न हो जो आज्ञापालन के विरुद्ध हो। ख़िलाफत की आज्ञापालन के बारे में हमारे प्यारे इमाम हज़रत अकदस ख़लीफतुल मसीह अल खामिस (पंचम ख़लीफा) अय्यदहुल्लाह तआला फरमाते हैं कि:-

" सहाबा के आज्ञापालन का क्या हाल था। उस का एक उदाहरण मैं आप के सामने रखता हुं। कई बार सुन चुके हैं। वह नज़ारा अपने सामने रखें जब शराब के हराम होने का आदेश आया तो कुछ सहाबा बैठ कर शराब पी रहे थे। जब ऐलान किया तो एक सहाबी उठे और एक लाठी को लेकर शराब के मटकों को तोड़ना शुरु कर दिया। किसी ने कहा जाकर पता तो कर लो कि वास्तविक आदेश है क्या? है भी या नहीं। तो उन्होंने कहा "नहीं" जो सुन लिया पहले उसको मान लो। यही आज्ञापालन है। इसके बाद पता कर लेना कि वास्तविक आदेश क्या था तो यह रुह है जो हम में से हर एक को पैदा करनी होगी। यह नहीं कि हमें अलग से कुछ कहेंगे तो तब हम पालन करेंगे वरना नहीं।

प्राय: हर बात जो इस ज़माने में अपने-अपने समय में समय के ख़लीफा कहते रहे हैं। जो समय का ख़लीफा आपके सामने पेश करता है। जो तरबीयती बातें आप के सामने रखी जाती हैं उन सब का आज्ञापालन करना और समय के ख़लीफा की हर बात को मानना यही वास्तविकता में आज्ञापालन है और यह नहीं कि छानबीन की जाए कि वास्तविक आदेश क्या था ? या क्या नहीं ? इस के पीछे क्या उद्धेश्य था ? जो समझ में आया उसके अनुसार उसी समय आज्ञापालन किया जाए। तभी उस नेकी का पुण्य मिलेगा। हां अगर कोई उलझन है तो बाद में उसको दूर किया जा सकता है। इसलिए हर अहमदी को कोशिश करनी चाहिए कि वह अपने आज्ञापालन की कसौटी को ऐसे बुलंद करे और उस शिक्षा का अनुसरण करने की पूरी कोशिश करे जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हमें दी है..।

अल्लाह तआला हर अहमदी को तौफीक दे कि वह जमाअत के सम्मान के लिए अपने अंहकार को समाप्त करते हुए आज्ञापालन के उच्च आदर्श स्थापित करने वाला हो,न कि अपने आप को जमाअत से अलग करके मूर्खता की मृत्यु मरने वाला हो। अल्लाह तआला दया फरमाए और हर एक पर अपनी कृपा फरमाए"

(खुत्बा जुमअ: 9 जून 2006,खुतवात-ए-महमूद भाग-4,पृष्ठ-287-288)

सौजन्य से:- शोबा तरबियत ख़ुद्दामुल अहमदिया क़ादियान)

जमाअत अहमदिया का फर्ज़

जमाअत अहमदिया दूसरे इमाम हजरत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद खलीफतुल मसीह सानी फरमाते हैं,

"हमारी जमाअत को अल्लाह तआला ने धर्म के प्रकाशन के लिए खड़ा किया है और अहमदियों का उदाहरण चौकीदारों की तरह है कि सुरक्षा के लिए निर्धारित किए जाते हैं। चौकीदारों का काम नहीं होता कि वह इस बात पर शिकवा करें कि दूसरे लोग उनके साथ पहरा नहीं देते। चौकीदार नियुक्त ही इसलिए किया जाता है कि पहरा दें और लोगों के जान माल की रक्षा। इसी तरह हमारी जमाअत इस मामले में किसी शिकवा गुंजाइश नहीं होनी चाहिए कि बाकी लोग इस्लाम के प्रकाशन की ओर ध्यान नहीं देते। अगर सारी की सारी दुनिया इस्लाम के प्रकाशन और इस्लाम की सुरक्षा से अनजान हो जाए। तब भी हमारी जमाअत के लोगों का कर्त्तव्य है कि इस्लाम की रक्षा करें और लोगों को इस्लाम की ओर बुलाएं। '

(अल्फज़ल 9, अक्टूबर 1963 .ई)

एक बुज़ुर्ग और दुआ की कुबूलियत

हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद ख़लीफतुल मसीह सानी (रज़ि) एक बुज़ुर्ग की घटना का वर्णन करते हुए फरमाते हैं:

"एक बुज़ुर्ग की घटना है कि वे हर रोज़ रात को उठ कर कुछ बातों के सम्बन्ध में दुआएं मांगा करते थे। संयोग से एक बार उनका एक मुरीद (अनुयायी) उनसे मिलने के लिए आया तथा तीन चार दिनों तक उनके पास ठहरा। जिस समय वे रात को नमाज़ के लिए उठे, उसकी भी आँख खुल गई। और वह भी अपने तौर पर इबादत में लीन रहा। जब पीर साहब दुआ कर चुके तो उनको एक आवाज़ आई कि तू चाहे कितना गिड़गिड़ाए ही याचना कर ले तेरी दुआ क़बूल न होगी। यद्यपि यह आवाज़ ख़ुदा की ओर से थी परन्तु उस मुरीद को भी सुनाई दी। मुरीद ने इस पर मन ही मन आश्चर्य तो किया परन्तु पीर साहब के आदर के कारण चुप रहा। दूसरे दिन फिर इसी प्रकार वे बुज़ुर्ग उठे तथा दुआ में लीन हुए। उस दिन भी इसी प्रकार आवाज़ आई तथा मुरीद ने सुनी परन्तु फिर भी चुप रहा। तीसरे दिन फिर वे बुज़ुर्ग उठे तथा उसी प्रकार दुआ एवं इबादत में व्यस्त हुए और फिर वही आवाज़ आई जो मुरीद ने भी सुनी, तब उससे न रहा गया और उसने पीर साहब से कहा कि एक दिन हुआ, दो दिन हुए, तीन दिन से आपको यह आवाज़ आ रही है और आप बस नहीं करते। इस पर वे बुज़ुर्ग बोले कि नादान, तू इतनी जल्दी घबरा गया, मुझे तो यह आवाज़ बीस साल से आ रही है परन्तु मैं सुस्ती नहीं करता। क्योंकि दुआ इबादत है तथा बन्दे का काम इबादत करना है। ख़ुदा तआला माबूद है, उसका काम दुआ को क़बूल करना अथवा रद करना है। वह अपना काम कर रहा है, मैं अपना काम कर रहा हूँ। तू बीच में कौन है जो घबरा रहा है। इस पर वह मुरीद चुप हो गया। अगले दिन जो दुआ के लिए उठे तो उनको इल्हाम हुआ कि उन बीस वर्षों के अन्दर की तेरी सारी दुआएं क़बूल हो गईं क्योंकि तू आज़माइश में सफल हुआ तथा कसौटी में पूरा उतरा। इस पर उन्होंने मुरीद से कहा कि देख यदि मैं तेरी नसीहत के अनुसार काम करता तो कितना घाटे में रहता। मुझे ख़ुदा तआला पर पूरा भरोसा था अन्ततः मुझे उसकी निकटता प्राप्त हुई

दुआ में स्थाईत्व (डटे रहना) अनिवार्य है :- अब देखो कि यदि वह बुज़ुर्ग अनुयायी की बात मान लेते। तो ऐसे समय पर जब कि उसकी सारी दुआएं क़बूल होने में बहुत थोड़ा समय रह गया था। उसका दुआ को छोड़ देना कैसा हानि कारक होता तथा उसकी सारी मेहनत व्यर्थ हो जाती। अत: मोमिन को कभी निराश नहीं होना चाहिए, धैर्य के साथ क़दम आगे ही बढ़ाता जाए तथा अपनी असफलता के कारण काम को न छोड़ बैठे। हां, अवश्य विचार करे कि मेरी असफलता के कारण क्या हैं और यदि किसी कारण का पता लगे तो उसको दूर करने का प्रयास करे। परन्तु ख़ुदा तआला की दया दृष्टि से कभी निराश न हो। कुछ लोग कहते हैं कि हमारे कर्मों का कोई फल नहीं निकलता इस लिए छोड़ देते हैं। मैं कहता हूँ कि यदि कोई परिणाम नहीं निकलता तो न सही, तुम अपना काम किए जाओ, अन्ततः तुम अवश्य सफल हो जाओगे।"

(जलसा सालाना क़ादियान 16 मार्च 1919 ई की तक़रीर इरफ़ान-ए-इलाही का एक भाग)

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 3 Thursday 29 November 2018 Issue No. 48

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

जलसा सालाना के दिन निकट आ गए हैं

दिसम्बर का महीना आरम्भ होते ही क़ादियान ज़िला गुरदासपुर की ज़मीन में एक नई ख़ुशबू से महक उठती है, यह ख़ुशबू जलसा सालाना कादियान की होती है। सारे संसार के अहमदियों के मन इस जलसा में सम्मिलित होने के लिए मचल उठते हैं। क्या अफ्रीकन क्या अमरीकन और क्या यूरोप वासी प्रत्येक अहमदी का दिल कादियान की पवित्र धरती के दर्शन के लिए बैचेन हो उठता हैं। वास्तव में जलसा सालाना है ही ऐसी चीज़।

इस वर्ष अन्तर्राष्ट्रीय अहमदिया मुस्लिम जमाअत भारत का 124 वां सालाना जलसा ज़िला गुरदासपुर ,पंजाब के शहर क़ादियान में 28,29,30 दिसम्बर दिनांक शुक्रवार,शनिवार तथा रविवार को आयोजित होगा। इन्शा अल्लाह तआला। इस अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भारत के विभिन्न प्रान्तों के अतिरिक्त विश्व के अनेक देशों से हज़ारों श्रृद्धालु सम्मिलित होते हैं। इस वार्षिक जलसा में अहमदी विद्वान ईश्वर की सत्ता,क़ुरआन शरीफ की शान्ति पूर्ण शिक्षा, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पवित्र जीवन, देश प्रेम, विश्व शान्ति तथा इंसानी भाईचारा ,सर्वधर्म समभाव पर आध्यात्मिक पिपासा को शान्त करने वाले ज्ञान वर्धक व्याख्यान प्रस्तुत करेंगे। जलसे के दूसरे दिन विभिन्न धर्मों के विद्वान अपने धर्मग्रन्थों से साम्प्रदायिक सद्भाव तथा धार्मिक एकता पर आधारित शिक्षा प्रस्तुत करते हैं। जलसे में विशेष रूप से अहमदिया मुस्लिम जमाआत के रूहानी ख़लीफ़ा हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब अय्दहुल्लाहो तआला लन्दन से सीधा सम्बोधन करते हैं।

जलसा सालाना की नींव सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के शुभ हाथों से 1891 ई में रखी गई आप ने इस जलसे को आरम्भ करने का निर्णय अल्लाह तआला के आदेश और उसी की तरफ से मिलने वाले मार्गदर्शन के परिणाम में किया और उसी समय यह भी घोषणा कि की यह अल्लाह तआला की सम्पूर्ण सहायता से जारी होने वाला एक प्रबंध है जो संसार में उन्नति करता चला जाएगा और सम्पूर्ण संसार इस से लाभ प्राप्त करेगा । पहले जलसा में केवल 75 व्यक्ति सम्मिलित हुए थे। कितने ही सौभाग्यशाली वे लोग थे जिनका नाम कयामत तक के लिए जमाअत अहमदिया के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिख दिया गया। जलसा सलाना प्रत्येक वर्ष उन्नति करता गया और इसका दामन लाभदायक एंव विस्तृत होता गया। भारत विभाजन के पश्चात पाकिस्तान एंव भारत में केन्द्रीय जलसे अत्यधिक महानता के साथ होते रहे और फिर संसार के दूसरे देशों मे भी इन जलसों का आरम्भ हुआ और अब तो अल्लाह ताला की कृपा से यह जलसे संसार के लगभग एक सौ देशों से अधिक देशों में प्रत्येक वर्ष बहुत महानता से आयोजित होते हैं। और इस में शामिल होने वालों की संख्या बढ़ते बढ़ते सैंकड़ों हज़ारों में पहुंच चुकी है। अगस्त 2014 ई में ब्रिटेन में आयोजित जलसा सालाना में 97 देशों के33270 श्रद्धालु सम्मिलित हुए थे। 2005 ई. में अहमदिया जमाअत के पांचवे ख़लीफा जब कादियान में पधारे थे तो इस जलसा में शामिल होने के लिए 52 देशों से 70000 हज़ार से अधिक लोग क़ादियान आए थे।

जलसा सलाना क्या है, कृपा एवं दया का एक बादल है जो समस्त संसार पर छा गया है और इस बादल के परिणाम स्वरुप होने वाली आध्यात्मिक वर्षा गांव गांव और शहर शहर में ख़ुदा के भक्तों को तृप्त करती चली जाती है।

अलहम्दुलिल्लाह अब इस जलसा सालाना के दिन बहुत निकट आ गए हैं। यह जलसा सांसारिक आंनदमयी मेलों की तरह नहीं, न ही कोई तमाशा है और न ही सांसारिक मेलों का रंग अपने भीतर रखता है सम्पूर्ण धार्मिक ज्ञान की प्राप्ति एवं वास्तविक ज्ञान की प्राप्ति करने वाले खुदा के सानिध्य तक पहुंचाने वाली राहों की खोज करने वाले इस्लाम के वास्तविक प्रेमी और प्रत्येक शहर व गांव के रहने वाले भारत एवं भारत से बाहर रहने वाले इस निश्चय के साथ इस जलसे में शामिल होते हैं कि हमें नेक एवं पवित्र आध्यात्मिक लोगों की सगंत से लाभ प्राप्त करने का अवसर प्राप्त होगा। परस्पर भाईचारा प्रेम शान्ति देखने एवं उसको फैलाने का अवसर मिलेगा। विभिन्न धर्मों के विचारों को सुनने का अवसर मिलेगा और हम आध्यात्मिक रुप से एक नया जीवन प्राप्त कर के अपने घरों में वापिस लौटने वाले होगें । यही वे महान उद्देश्य हैं जिनके लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस जलसे में शामिल होने वालों के लिए अत्यंत पीढ़ा के साथ दुआऐं की हैं। अल्लाह करे कि इन दुआओं का लाभ हमेशा जारी रहे ।

इस जलसा के उद्देश्य को बताते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपनी जमाअत को यह उपदेश देते हैं कि:

"इस सिलसिले की बुनयादी ईंट ख़ुदा तआला ने अपने हाथ से रखी है और इस के लिए क़ौमें तैयार की हैं जो शीघ्र ही इस में आ मिलेंगी क्योंकि यह उस सामर्थवान का कार्य है जिस के आगे कोई बात अनहोनी नहीं।"(मज्मूआ इशतेहार भाग 1 पृ 341)

कादियान दारूल अमान में मनाए जाने वाले इस सालाना जलसा के पवित्र दिनों में नमाज़, दरस, और भाषणों में जो आध्यात्मिक प्रसन्नता मिलती है वह किसी अन्य स्थान में नहीं मिल सकती । इस आध्यात्मिक प्रसन्नता का अनुभव शब्दों में वर्णन करना कठिन है। जलसा सालाना के परिवेश का अनुमान इस बात से अच्छी तरह लगाया जा सकता है कि यह जलसा दुआओं, अल्लाह तआला की इबादत, गुनगाण और मोमीनों के प्रेम एकता भाईचारा के पवित्र वातावरण में आयोजित होता है। प्रतिदिन नमाज-ए-तहज्जुद एवं पाचं अनिवार्य नमाजों का विशेष प्रबंध किया जाता है। कादियान की चारों दिशाऐं अल्लाह के गुनगाण एवं अल्लाहु अकबर के नारों से गूंजती रहती हैं। दूर दूर क्षेत्रों एव देशों से आए हुए विभिन्न रंगों एवं जातियों के लोग एक दूसरे से परिचित होते हैं और आपस में ऐसे प्रेम एवं मुहब्बत से मिलते है जैसे दो बिछड़े हुए भाई हों । इस अवसर में जात-पात, रंग-नस्ल, और भाषाओं के अन्तर को भूलकर हर एक इस्लाम और अहमदिया की माला में जुड़ जाता है। यह दिन आध्यात्मिक भाईयों एवं बहनों के आपसी मिलन और भाईचारा एव मानवता के सम्बंध दृढ़ करने के दिन होते हैं । हालांकि कादियान के भोजन, ऋतु, रीति, प्रथा, भाषा और माहौल अलग होने के बावजूद अलग अलग राज्यों और देशों से आए हुए असंख्य अहमदी यहां इस प्रकार से प्रसन्न होते हैं कि उन के अंदर कोई अपरिचित अथवा अन्य भिन्नता बाकी नहीं रहती । अनेक वृद्ध जो अपने शहर में अपने आपको बहुत कमज़ोर जानते हैं वह क़ादियान पहुँच कर अपने आपको युवक समझने लगते हैं। अलग अलग राज्यों से आए हुए लोग जब आपस में मिलते हैं तो वे अपने अंदर एक आध्यात्मिक सांत्वना प्राप्त करते हैं । जिस का वर्णन नहीं हो सकता। सक्षेपं यह की यह तीन दिन प्रचार अध्यात्म एवं ज्ञान की उन्नति के अनमोल दिन होते हैं । इन से जमाअत के लोगों को भरपूर लाभ प्राप्त करना चाहिए ।

इस जलसा में योगदान देने वालों के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस प्रकार से दुआ करते हैं कि :

''आख़िर पर मैं दुआ करता हूँ कि प्रत्येक व्यक्ति जो इस जलसा सालाना के लिए यात्रा करता है अल्लाह उनका सहायक हो और उन्हें बे-हिसाब बदला दे और उनके ऊपर अपनी दया (कृपा) बरसाए और उनकी घबराहटें और व्याकुल परिस्थितियों को आसान कर दे और उनके दु:ख दूर करके उन्हें मुक्ति दे और उनके प्रति मनोकामनाओं को संपूर्ण करे और क़यामत के दिन उन सब को अपने प्रिय भक्तों के साथ उठाए । जिन के ऊपर उसकी अपार कृपा अवर्तिण हुई है और अल्लाह इस यात्रा की समाप्ति तक उनका सहाय हो ।

(इश्तिहार 7 दिसम्बर 1892 ई.)

आज फिर एक साल बाद दोबारा यह जलसा बड़ी ख़ुशियों आध्यात्मिक प्रसन्नताओं का उपहार लेकर उपस्थित हो रहा है, बुला रहा है कि आईए और इस उपहार को स्वीकार कर के प्रसन्नता से झूम उठिये। अल्लाह तआला से दुआ है कि अल्लाह तआला अपनी कृपा एवं सुरक्षा व सहायता से जलसा सालाना को असाधारण उन्नति देता चला जाऐ और इसे उन्नति का एक ताज़ा चिन्ह बना दे। अल्लाह करे सम्पूर्ण मानवजाति के लिए यह जलसा सालाना आपसी धार्मिक सांसारिक मतभेद समाप्त करने वाला हो आमीन ।

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad